

 **AstroSage**

World's No. 1 Astrology Portal & App

कीमत: ~~\$ 10~~ मुफ्त

अवकहडा चक्र

पाया (नक्षत्र आधारित)	चाँदी
वर्ण	वैश्य
योनी	महिष
गण	देव
वश्य	मानव
नाड़ी	आदि
दशा भोग्य	Panz 9 O 11 Ek 30 Fn
लग्न	धनु
लग्न स्वामी	गुरु
राशि	कन्या
राशि स्वामी	बुध
नक्षत्र-पद	हस्त 1
नक्षत्र स्वामी	चंद्र
जुलियन दिन	2448072
सूर्य राशि (हिन्दू)	मिथुन
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कर्क
अयनांश	023.43.25
अयनांश नाम	लाहिरी
अक्ष से झुकाव	023.26.26
साम्पातिक काल	13.26.28

अनुकूल बिन्दु

भाग्यांक	2
शुभ अंक	2, 4, 5, 8
अशुभ अंक	1, 7, 9
शुभ वर्ष	11,20,29,38,47
भाग्यशाली दिन	रवि, शुक्र
शुभ ग्रह	सूर्य, शुक्र
मित्र राशियां	वृषभ, मकर, कन्या
शुभ लग्न	धनु, वृषभ, मकर
भाग्यशाली धातु	कांसा
भाग्यशाली रत्न	पन्ना

व्यक्ति विवरण

लिंग	Male
दिनांक	29 : 6 : 1990
समय	19 : 30 : 56
दिन	शुक्रवार
इष्टकाल	033-43-59
जन्म स्थान	Maharashtra
टाइम जोन	5.5
अक्षांश	18 : 0 : N
रेखांश	74 : 0 : E
स्थानीय समय संशोधन	00:34:00
युद्ध कालिक संशोधन	00:00:00
स्थानीय औसत समय	18:56:56
जन्म समय – जीएमटी	14:0:56
तिथि	अष्टमी
हिन्दू दिन	शुक्रवार
पक्ष	शुक्ल
योग	वरीयान
करण	विष्टि
सूर्योदय	06:01:20
सूर्यास्त	19:13:19
दिन अवधि	13:11:59

घटक (अशुभ)

दिन	शनिवार
करण	कौलव
लग्न	मीन
माह	भाद्रपद
नक्षत्र	श्रवण
प्रहर	1
राशि	मिथुन
तिथि	5, 10, 15
योग	सुकर्मन
ग्रह	चंद्र

शादी से जुड़े सवाल?

सिर्फ वेरिफाइड ज्योतिषियों से पूछें

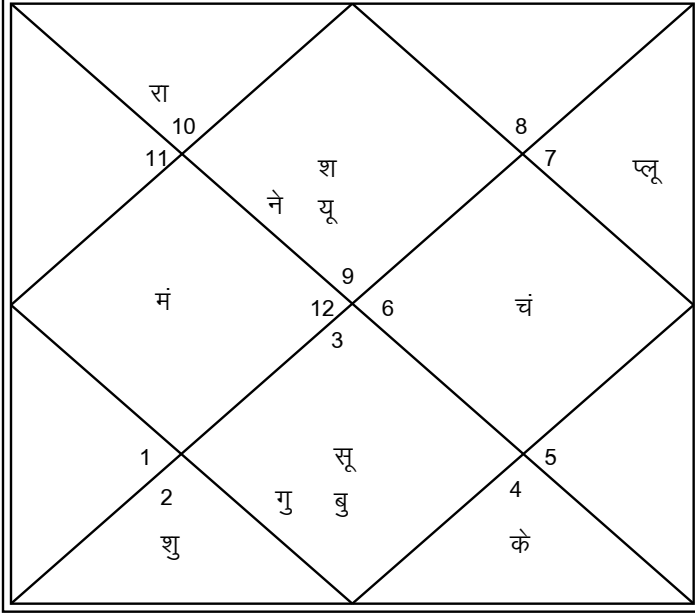
फ्री कंसल्टेशन



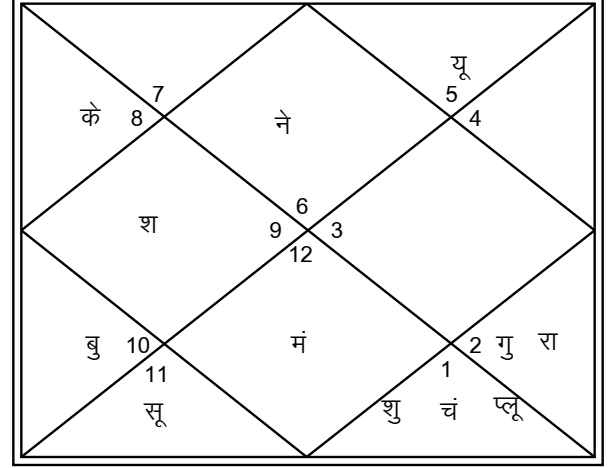
पारम्परिक

नाम	Sagar	जुलियन दिन	2448072	लग्न स्वामी	गुरु	दशा भोग्य	Panz 9 O 11 Ek 30 Fh
लिंग	M	अयनांश नाम	लाहिरी	लग्न	धनु	करण	विष्टि
दिनांक	29.6.1990	अयनांश	023.43.25	योग	वरीयान	नक्षत्र स्वामी	चंद्र
दिन	शुक्रवार	जन्म स्थान	Maharashtra	तिथि	अष्टमी	नक्षत्र-पद	हस्त-1
समय	19.30.56	रेखांश	74.0.E	सूर्यास्त	19.13.19	राशि स्वामी	बुध
साम्पातिक काल	13.26.28	अक्षांश	18.0.N	सूर्योदय	06.01.20	राशि	कन्या

लग्न चक्र



नवमांश चक्र



विंशोत्तरी दशा

चंद्र -10 वर्ष 29/ 6/90 से 29/ 6/00	
चंद्र	29/4/91
मंगल	29/11/91
राहु	29/5/93
गुरु	29/9/94
शनि	29/4/96
बुध	29/9/97
केतु	29/4/98
शुक्र	29/12/99
सूर्य	29/6/00

मंगल -7 वर्ष 29/ 6/00 से 29/ 6/07	
मंगल	26/11/00
राहु	14/12/01
गुरु	20/11/02
शनि	29/12/03
बुध	26/12/04
केतु	23/5/05
शुक्र	23/7/06
सूर्य	29/11/06
चंद्र	29/6/07

राहु -18 वर्ष 29/ 6/07 से 29/ 6/25	
राहु	11/3/10
गुरु	5/8/12
शनि	11/6/15
बुध	29/12/17
केतु	17/1/19
शुक्र	17/1/22
सूर्य	11/12/22
चंद्र	11/6/24
मंगल	29/6/25

ग्रह स्थिति				
ग्रह	राशि	अक्षांश	नक्षत्र	पद
लग्न	धनु	18.55.54	पूर्वाषाढा	2
सूर्य	मिथुन	13.50.59	आर्द्रा	3
चंद्र	कन्या	10.00.13	हस्त	1
मंगल	मीन	27.17.53	रेवती	4
बुध	मिथुन	10.00.39	आर्द्रा	2
गुरु	मिथुन	25.14.16	पुनर्वसु	2
शुक्र	वृषभ	11.42.13	रोहिणी	1
शनि (व)	धनु	29.22.23	उषाषाढा	1
राहु (व)	मकर	15.13.14	श्रवण	2
केतु (व)	कर्क	15.13.14	पुष्य	4
यूरे (व)	धनु	13.56.55	पूर्वाषाढा	1
नेप (व)	धनु	19.33.56	पूर्वाषाढा	2
प्लू (व)	तुला	21.24.09	विशाखा	1

अष्टकवर्ग तालिका												
राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	5	2	4	3	2	4	6	6	3	3	5	5
चंद्र	5	4	3	3	4	5	3	4	4	5	4	5
मंगल	5	2	2	2	3	3	6	4	4	1	2	5
बुध	5	5	5	4	3	4	6	4	5	5	3	5
गुरु	6	3	6	4	3	6	5	2	4	6	4	7
शुक्र	6	4	1	5	6	3	5	3	3	6	6	4
शनि	5	5	1	3	1	2	4	3	3	3	5	4
योग	37	25	22	24	22	27	35	26	26	29	29	35

चलित तालिका			
भाव	राशि	भाव आरंभ	भाव मध्य
1	धनु	05.42.57	धनु
2	मकर	05.42.57	मकर
3	कुंभ	09.17.03	कुंभ
4	मीन	12.51.09	मीन
5	मेघ	12.51.09	मेघ
6	वृषभ	09.17.03	वृषभ
7	मिथुन	05.42.57	मिथुन
8	कर्क	05.42.57	कर्क
9	सिंह	09.17.03	सिंह
10	कन्या	12.51.09	कन्या
11	तुला	12.51.09	तुला
12	वृश्चिक	09.17.03	वृश्चिक

गुरु -16 वर्ष 29/ 6/25 से 29/ 6/41	
गुरु	17/8/27
शनि	1/3/30
बुध	5/6/32
केतु	11/5/33
शुक्र	11/1/36
सूर्य	29/10/36
चंद्र	1/3/38
मंगल	5/2/39
राहु	29/6/41

शनि -19 वर्ष 29/ 6/41 से 29/ 6/60	
शनि	2/7/44
बुध	11/3/47
केतु	20/4/48
शुक्र	20/6/51
सूर्य	2/6/52
चंद्र	2/1/54
मंगल	11/2/55
राहु	17/12/57
गुरु	29/6/60

बुध -17 वर्ष 29/ 6/60 से 29/ 6/77	
बुध	26/11/62
केतु	23/11/63
शुक्र	23/9/66
सूर्य	29/7/67
चंद्र	29/12/68
मंगल	26/12/69
राहु	14/7/72
गुरु	20/10/74
शनि	29/6/77

केतु -7 वर्ष 29/ 6/77 से 29/ 6/84	
केतु	26/11/77
शुक्र	26/1/79
सूर्य	2/6/79
चंद्र	2/1/80
मंगल	29/5/80
राहु	17/6/81
गुरु	23/5/82
शनि	2/7/83
बुध	29/6/84

शुक्र -20 वर्ष 29/ 6/84 से 29/ 6/04	
शुक्र	29/10/87
सूर्य	29/10/88
चंद्र	29/6/90
मंगल	29/8/91
राहु	29/8/94
गुरु	29/4/97
शनि	29/6/00
बुध	29/4/03
केतु	29/6/04

सूर्य -6 वर्ष 29/ 6/04 से 29/ 6/10	
सूर्य	17/10/04
चंद्र	17/4/05
मंगल	23/8/05
राहु	17/7/06
गुरु	5/5/07
शनि	17/4/08
बुध	23/2/09
केतु	29/6/09
शुक्र	29/6/10

॥ आपका लग्न ॥

लग्न क्या है –

भारतीय ज्योतिष में लग्न का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। व्यक्ति के जन्म के समय में जो राशि पूर्वीय क्षितिज पर उदित हो रही होती है उस राशि को लग्न राशि कहते हैं। वह राशि जिस भाव में पड़ती है उसे लग्न कहते हैं। लग्न व्यक्ति के जीवन की छोटी से छोटी घटना के बारे में जानने में मदद करता है।

आपका लग्न है: **धनु**

स्वास्थ्य धनु लग्न के लिए:

धनु लग्न के प्रभाव से आपको विशेष रूप से कूल्हों और जांघों के रोग हो सकते हैं। आपकी राशि के लोगों में पीठ दर्द की समस्या अधिक होती है। बुखार के लक्षण और फेफड़े से जुड़ी समस्या भी पाई जाती है। अत्यधिक वसायुक्त भोजन के खान-पान से आपके जोड़ों में दर्द की समस्या हो सकती है।

स्वभाव व व्यक्तित्व धनु लग्न के लिए:

धनु राशि के लोग प्रभावी, चमकदार और भविष्य के प्रति आशावादी नजरिए वाले होते हैं। साधारणतया आप की लग्न के लोग अच्छे स्वाभाव, हंसमुख स्वाभाव और आध्यात्मिक प्रवृत्ति के होते हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में आप असंयमित हो सकते हैं और जबाबदेही के प्रति आपमें आशंका बनी रहती है। दूसरे लोग अनजाने में आपको गलत समझ लेते हैं क्योंकि आप बातचीत में जल्दबाजी करते हैं। आपमें जुआ खेलने के प्रति लगाव हो सकता है। आपकी लग्न में जन्म लेने वाले लोग आशावादी, महत्वाकांक्षी, प्रेरणादायक, उत्साही और खर्चीले होते हैं। आपका जीवन के प्रति नजरिया सकारात्मक, ऊर्जा से ओतप्रोत, साहसी, अपने अनुभव को दूसरों से अधिक से अधिक बांटने वाले होता है। आप अनावश्यक भाषण से दूसरों को लुभाना पसंद नहीं करते। आप लोग यात्रा करना पसंद करते हैं और आसपास के बारे में जानकारी इकट्ठा करना भी पसंद करते हैं। आपकी लग्न के लोग सम्मानित, ईमानदार, विश्वासी, उदार और न्याय के प्रति वफादार होते हैं। आप आम तौर पर फैशन की चाह रखने वाले, और ईमानदारी की एक मजबूती भावना के साथ अध्यात्म की ओर झुकाव रखने वाले होते हैं। आपकी लग्न के लोग मजबूत इच्छा शक्ति वाले होते हैं और वे किसी भी कार्य को सफलता पूर्वक अंजाम देने का इरादा रखते हैं।

शारीरिक रूप-रंग धनु लग्न के लिए:

धनु लग्न के लोग काफी मजबूत लंबे, होते हैं। आपके होठ काफी लुभावने और घने बाल वाले होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऊर्जवान और लुभावना होता है। तीस साल की उम्र में ही अधिक उम्र के दिखने लगते हैं क्योंकि ये अधिक वजन बढ़ाने के बहुत सारे उपाय करते हैं। धनु लग्न के व्यक्ति सामान्य रूप से करिश्माई, आकर्षक और ऊर्जवान व्यक्तित्व के होते हैं। आपकी नजरे प्रसन्नचित, और पोशाक सामान्य होती हैं।

फ्री में चैट करें

पहली चैट फ्री – विद्वान ज्योतिषियों के साथ

अभी चैट करें



॥ नक्षत्र फल ॥

हिन्दू ज्योतिष में नक्षत्रों का विशेष महत्व है। आकाश को यदि 27 (कभी-कभी 28) बराबर भागों में विभाजित किया जाए, तो प्रत्येक भाग एक नक्षत्र कहलाता है। हर नक्षत्र को बराबर-बराबर चार पदों में भी विभाजित किया गया है। ज्योतिष की अवधारणा के अनुसार हर पद एक अक्षर को इंगित करता है। प्रायः किसी व्यक्ति के जन्म के समय चन्द्रमा जिस पद में होता है, उससे जुड़े अक्षर से उस व्यक्ति का नाम रखा जाता है।

आपका नक्षत्र रिपोर्ट : हस्त

आपका नक्षत्र चरण : 1

हस्त नक्षत्र फल : आप अनुशासनप्रिय हैं तथा जीवन में आने वाली हर परेशानियों का विवेक से सामना करते हैं। आपका दिमाग तेज है इसलिए आपके मस्तिष्क में नयी-नयी योजनाएँ आती हैं। छल-कपट का शिकार होने पर भी आप अन्याय व शोषण के खिलाफ कुछ नहीं बोलते हैं। स्वभाव से आप शांत हैं और आपकी मुस्कान में एक चुम्बकीय शक्ति है। आप संतोषी, मिलनसार और सबसे जल्दी घुल-मिल जाते हैं। पढ़ने-लिखने में आप बेहद तेज हैं और शब्दों के जादूगर हैं। किसी भी विषय को आसानी से समझने की योग्यता आपमें भरी हुई है। अपनी बातों से ही आप सिक्का जमा लेते हैं और आप में चतुरता व मधुरता भी है। दिमागी क्षमता प्रबल होने के बावजूद आपकी कमी यह है की आप किसी भी विषय पर तुरंत निर्णय नहीं लेते हैं। आप शांतिप्रिय हैं इसलिए कलह व विवाद की स्थिति से दूर ही रहते हैं। आपके मन में एक झिझक रहती है, फिर भी आप नये-नये मित्र बना ही लेते हैं। मित्रों से काम निकालना भी आपको बखूबी आता है। अवसर आने पर आपको जहाँ लाभ दिखाई देता है आप उसी पक्ष की ओर हो लेते हैं। नौकरी की अपेक्षा व्यवसाय करना आपको ज्यादा पसंद है तथा व्यवसाय के प्रति लगाव के कारण ही आप इस क्षेत्र में काफी तेजी-से उन्नति कर सकते हैं। हर प्रकार के सांसारिक सुखों का आप आनंद लेते हैं। आपका जीवन सुखमय है और अपने कार्यों से आपको समाज में मान-सम्मान व आदर प्राप्त है। अपनी धुन के आप पक्के हैं। मन में जो होता है आप वही करते हैं लोगो के कहने से अपने निर्णय बदलना आपको नहीं आता है। जीवन में आपको प्रायः आर्थिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ता क्योंकि आप अपने दिमाग का बखूबी इस्तेमाल करके धन कमाना जानते हैं। आप शांतिप्रिय, जरूरतमंदों की सहायता के लिए सदैव तत्पर और आडम्बर-शून्य हैं। आपके जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव हैं फिर भी आप हमेशा मुस्कुराते रहते हैं। विवादों का निपटारा करने में आपको दक्षता प्राप्त है, इसलिए आप अच्छे सलाहकार भी हैं। हँसी-मजाक से लोगों को सीख देने में आप कुशल हैं क्योंकि आप जीवन को एक खेल और संसार को खेल का मैदान समझते हैं। शारीरिक और मानसिक रूप से आप सदा सक्रिय रहते हैं क्योंकि निठल्ले बैठना आपको पसंद नहीं है। भले ही आप विनोदी स्वभाव के हों परंतु अपने काम में किसी भी तरह की चूक या कमी आपको बर्दाश्त नहीं है। अपने प्रयास व योग्यता से मनोवांछित लक्ष्य को पाना ही आपका विशिष्ट गुण है।

शिक्षा और आय : अपने कार्यक्षेत्र में आप पूर्ण अनुशासन का पालन करते हैं। किसी भी मामले में आप पीछे नहीं हैं दृ यह साबित करना भी आपको बखूबी आता है। आप जौहरी, शिल्पी या दस्तकार, एक्रोबैट, जिम्नास्टिक या सर्कस के कलाकार, कागज के उत्पादन से जुड़े कार्य, छपाई व प्रकाशन कार्य, शेयर-बाजार, पैकेजिंग से जुड़े काम, खिलौने बनाने के काम, दुकानदार, क्लर्क, बैंकिंग से जुड़े क्षेत्र, टाइपिस्ट, फिजियोथेरेपिस्ट, सौंदर्य प्रसाधन से जुड़े कार्य, डॉक्टर, मनोचिकित्सक, ज्योतिषी, वस्त्रों से जुड़े कार्य, कृषि, बाग-बगीचे से जुड़े कार्य, रेडियो व दूरदर्शन, समाचार वाचक, पत्रकारिता, चिकनी मिट्टी व सिरेमिक से जुड़े कार्य आदि करके जीवनयापन कर सकते हैं।

पारिवारिक जीवन : आप आदर्श वैवाहिक जीवन का आनंद लेते हैं परन्तु वैवाहिक जीवन में छोटे-मोटे विवाद भी संभव हैं। आपके जीवनसाथी का स्वभाव अच्छा है। आपकी प्रथम संतान पुत्र हो सकती है।

॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

चरित्र:

आप सौन्दर्य—प्रेमी हैं, चाहे वह कला, दर्शनीयस्थल या आकर्षक व्यक्ति ही क्यों न हो। आप केवल बाह्य सौन्दर्य ही नहीं, अपितु आन्तरिक सौन्दर्य के प्रति भी आकर्षित होते हैं। अच्छा संगीत आपको पसन्द आता है, किसी व्यक्ति का सच्चरित्र आपको पसन्द आता है। आप सामान्य से ऊपर प्रत्येक वस्तुओं के पारखी हैं। दूसरों को खुश करने की आपके अन्दर नैसर्गिक क्षमता है। आप परेशान लोगों को सान्त्वना देना अच्छी तरह से जानते हैं और आप जानते हैं कि लोगों को अपने आप से खुश कैसे रखा जाये। यह एक विरला गुण है एवं इस कारण संसार में आप जैसे व्यक्ति कम ही हैं। आप अन्य लोगों जितने व्यावहारिक नहीं हैं और आप समय के भी पाबन्द नहीं हैं। आप आवश्यकता से अधिक संवेदनशील और जो कि आपको कभी—कभी परेशानी में डाल देती है परन्तु आपकी खिन्नता लड़ाई—झगड़े के रूप में बाहर नहीं आती है। असामंजस्य से आप हर कीमत पर दूर रहते हैं। सम्भवतः आप अपने मन से दुःख को दूर रखते हैं।

सौभाग्य व संतुष्टि:

आप साहसी व्यक्ति हैं। आप इतने आवेगपूर्ण हैं कि आपके पास भय और चिन्ता के लिये कोई समय नहीं है। इस तरह की समय—समय पर होने वाली घटनाएं आपको आनंद प्रदान करती हैं। आपका व्यक्तित्व रुचिपूर्ण होने के कारण लोग आपका साथ पसन्द करते हैं। आप एक उत्तम व्यक्तित्व—वाचक व प्राच्य विद्याओं की ओर आकर्षित हैं, जो आपको जीवन को गहराई से समझने में सहायता करता है। आपकी यह असाधारण दूरदृष्टि आपको आगे बढ़ने में एवं आपकी सफलता में बाधक कारणों को समझने में आपकी सहायता करती है।

जीवन शैली:

आपकी सफलता में आपके सहकर्मी प्रेरणा का काम करते हैं। अतः अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आप अन्य लोगों पर निर्भर रह सकते हैं।

क्या आपकी कुंडली में है **राजयोग?**
जानने के लिए

AstroSage AI से करें कंसल्ट

फ्री चैट



॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

रोजगार:

आपके अन्दर विषय की गहराइयों को समझने की क्षमता है और आपको उसी दिशा में कार्यक्षेत्र का चयन करना चाहिये। ये प्रोजेक्ट अपने आप में पूर्ण होने चाहिये और उसे खत्म करने की कोई समय-सीमा या दबाव नहीं होनी चाहिये। उदाहरणार्थ, यदि आप 'इंटीरियर डीजाइन' को अपना कार्यक्षेत्र बनाते हैं, तो आपके उपभोक्ताओं के पास प्रचुर धन होना चाहिये ताकि आप अपना कार्य उत्तम तरीके से कर सकें।

व्यवसाय:

आप ऐसे किसी कार्य से प्रसन्न नहीं रहेंगे जो नीरस और सुरक्षित हो। जब तक कि आपका कार्य आपके लिये नित नई परेशानियां सुलझाने के लिये नहीं लाता, आप संतुष्ट नहीं होंगे। परन्तु ऐसा कुछ भी जिसमें खतरे का थोड़ा सा तड़का हो वह आपको और अधिक प्रसन्न करेगा। सर्जन, कन्सल्टेशन इंजीनियर और उच्चतर प्रबन्धन आदि, इस तरह के कार्यक्षेत्र के कुछ उदाहरण हैं। सर्जन का कार्य आपको इसलिये आकर्षित करता है क्योंकि लोगों की जिन्दगियां व आपकी स्वयं की प्रतिष्ठा आपके कार्य पर हमेशा ही निर्भर करती हैं। एक कन्सल्टेशन इंजीनियर को हमेशा ही निर्माण सम्बन्धी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। हमारे कहने का आश्रय यह है कि ऐसा कोई कार्य जिसमें अत्यधिक क्षमता की जरूरत हो व हमेशा खतरों की सम्भावना हो।

स्वास्थ्य:

यह कहना ठीक नहीं होगा कि आप हृष्ट-पुष्ट हैं। लेकिन इसका कोई कारण नहीं है कि आप दीर्घायु नहीं हो सकते बस थोड़ी सावधानी बरतने की आवश्यकता है। दो रोग ध्यान देने योग्य हैं – अपच व गठिया। अपच से बचने के लिये भोजन लेते वक्त जल्दबाजी न करें तथा शान्ति पूर्वक भोजन लें। साथ ही भोजन को सही समय पर लें। गठिया से बचने के लिये ध्यान रखें कि आप अपने जोड़ों को आर्द्र वायु, ठण्डी हवाओं और गीलेपन आदि से दूर रखें।

शादी से जुड़े सवाल?

सिर्फ वेरिफाइड ज्योतिषियों से पूछें

फ्री कंसल्टेशन



॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

रुचि:

आप अपने हाथों द्वारा कला को विलक्षण रूप से अभिव्यक्त करने में सक्षम हैं। एक पुरुष के तौर पर, आप घर के लिये सामान बना सकते हैं और बच्चों के खिलौनों को बेहतर बनाने में आनन्द महसूस करते हैं। आप एक सिलाई-कढ़ाई करने वाले, चित्रकार आदि होंगे और बच्चों के कपड़े खरीदने से अधिक बनाना पसन्द करेंगे।

प्रेम आदि:

आप प्रेम को बड़ी गम्भीरता से लेते हैं। वस्तुतः, आपसे पाने का प्रयास इस तरह करते हैं, कि आपका प्रिय उससे भयभीत हो सकता है। एकबार प्रेम की निर्बाध धारा प्रवाहित होना प्रारम्भ हो जाए, आप दर्शाते हैं कि आपका लगाव गहरा व वास्तविक है। आप एक सहानुभूतिपूर्ण जीवनसाथी हैं और जिससे आप विवाह करेंगे, वह आपका अखण्ड प्रेम प्राप्त करेगा। हांलाकि आप उससे यह उम्मीद करते हैं कि वह आपकी समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुने, परन्तु आपके अन्दर दूसरों की बात को ध्यान से सुनने का धैर्य नहीं है।

वित्त:

वित्त संबन्धी मामलों में, आपको किसी बात की चिन्ता की आवश्यकता नहीं है। आपके मार्ग में कई सुअवसर आएंगे। आप शून्य से भी काफी कुछ बना सकते हैं, बड़ी एवं उतार-चढ़ाव वाली योजनायें, आपका एकमात्र जोखिम हैं। वित्त के सम्बन्ध में आप अपने मित्रों के लिये, यहाँ तक कि स्वयं के लिये एक पहेली होंगे। आप अपने धन का असामान्य तरीकों में निवेश करेंगे। सामान्य तौर पर, आप पैसा बनाने में सफल रहेंगे मुख्यतः जमीन, घर, अचल सम्पत्ति से जुड़े हुए क्षेत्रों में।



आपका भविष्य, आपकी कुंडली में
व्यक्तिगत राशिफल 2025

अभी ऑर्डर करें

॥ विस्तृत भविष्यफल ॥

शिक्षा:

आपके अंतर में स्वाभाविक रूप से अंतर्ज्ञान निहित है। आप बड़ी ही शीघ्रता से और आसानी से विषयों को समझ सकते हैं और उनके बारे में अपनी राय बना सकते हैं। आपकी यही खूबी आपको एक उत्तम दर्जे का व्यक्ति बनाती है। आप के अंतर में दार्शनिकता कूट-कूट कर भरी होने के कारण आप जीवन को सहज रूप से लेकर आवश्यक कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। यही वजह है कि आप एक से अधिक विषयों में भी पारंगत हो सकते हैं और न्याय व्यवस्था तथा व्यापार के क्षेत्र से संबंधित शिक्षाएं आपको विशेष रूप से अपनी ओर आकर्षित करेंगी। आप एक अच्छी संग्रहण क्षमता के स्वामी हैं जिसके परिणाम स्वरूप आप छोटी से छोटी बात को बड़ी आसानी से सीख जाते हैं और यही बात आपकी शिक्षा पर भी लागू होती है। आप नियमपूर्वक पढ़ाई करना पसंद करेंगे और इसी से आपको किसी भी विषय को गहनता से समझने में मदद मिलेगी। आप की गिनती उच्च दर्जे के विद्वानों में हो सकती है।



आपका भविष्य, आपकी कुंडली में
व्यक्तिगत राशिफल 2025

अभी ऑर्डर करें

॥ मंगलदोष विवेचन ॥

सामान्यतः मंगल दोष जन्म-कुण्डली में लग्न और चन्द्र से देखा जाता है।

आपकी कुण्डली में मंगल लग्न से चतुर्थ भाव में स्थित है भाव में व चंद्र से सप्तम भाव में है।

अतः मंगल दोषलग्न कुण्डली और चंद्र कुण्डली में उपस्थित है।

ऐसा माना जाता है कि मंगल दोष वैवाहिक जीवन में समस्याएँ खड़ी करता है।

ऐसा माना जाता है कि अगर एक मांगलिक व्यक्ति दूसरे मांगलिक व्यक्ति से विवाह करता है तो मंगल दोष रद्द हो जाता है।

ग्रह शांति (अगर मंगल दोष उपस्थित हो तो)

उपाय (विवाह से पहले किए जाने चाहिए)

कुंभ विवाह, विष्णु विवाह और अश्वत्थ विवाह मंगल दोष के सबसे ज्यादा मान्य उपाय हैं। अश्वत्थ विवाह का मतलब है पीपल या बरगद के वृक्ष से विवाह कराकर, विवाह के पश्चात् उस वृक्ष को कटवा देना।

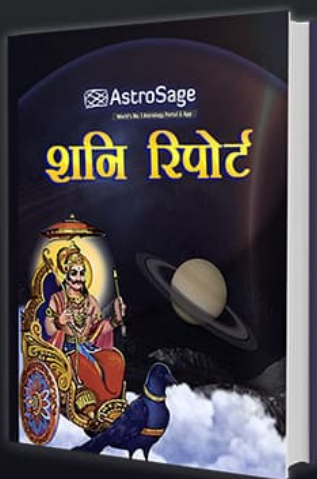
उपाय (विवाह पश्चात् भी किए जा सकते हैं।)

- 1) केसरिया गणपति अपने पूजा गृह में रखें एवं रोज उनकी पूजा करें।
- 2) हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- 3) महामृत्युंजय का पाठ करें।

उपाय (ये लालकिताब आधारित उपाय हैं जोकि विवाह पश्चात् किए जा सकते हैं)।

- 1) चिड़ियों को कुछ मीठा खिलाएँ।
- 2) घर पर हाथी-दांत रखें।
- 3) बरगद के पेड़ की पूजा मीठे दूध से करें

नोट: हमारा सुझाव है कि इन उपायों को करने से पूर्व किसी योग्य ज्योतिषी की सलाह ले लें।



शनि को सुधारें

शनि रिपोर्ट पाएं

अभी ऑर्डर करें

॥ साढे साती रिपोर्ट ॥

नाम	Sagar
दिनांक	29/6/1990
समय	19:30:56
जन्म स्थान	Maharashtra
लिंग	Male
राशि	कन्या
तिथि	अष्टमी
नक्षत्र	हस्त

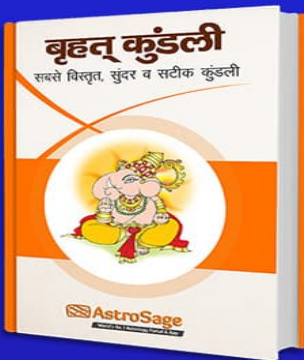
क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
1	छोटी पनौती	धनु	जून 21, 1990	दिसम्बर 14, 1990	
2	छोटी पनौती	मेष	अप्रैल 18, 1998	जून 06, 2000	
3	साढे साती	सिंह	नवम्बर 01, 2006	जनवरी 10, 2007	उदय
4	साढे साती	सिंह	जुलाई 16, 2007	सितम्बर 09, 2009	उदय
5	साढे साती	कन्या	सितम्बर 10, 2009	नवम्बर 14, 2011	शिखर
6	साढे साती	तुला	नवम्बर 15, 2011	मई 15, 2012	अस्त
7	साढे साती	कन्या	मई 16, 2012	अगस्त 03, 2012	शिखर
8	साढे साती	तुला	अगस्त 04, 2012	नवम्बर 02, 2014	अस्त
9	छोटी पनौती	धनु	जनवरी 27, 2017	जून 20, 2017	
10	छोटी पनौती	धनु	अक्टूबर 27, 2017	जनवरी 23, 2020	
11	छोटी पनौती	मेष	जून 03, 2027	अक्टूबर 19, 2027	

॥ साढे साती रिपोर्ट ॥

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
12	छोटी पनौती	मेष	फरवरी 24, 2028	अगस्त 07, 2029	
13	छोटी पनौती	मेष	अक्टूबर 06, 2029	अप्रैल 16, 2030	
14	साढे साती	सिंह	अगस्त 28, 2036	अक्टूबर 22, 2038	उदय
15	साढे साती	कन्या	अक्टूबर 23, 2038	अप्रैल 05, 2039	शिखर
16	साढे साती	सिंह	अप्रैल 06, 2039	जुलाई 12, 2039	उदय
17	साढे साती	कन्या	जुलाई 13, 2039	जनवरी 27, 2041	शिखर
18	साढे साती	तुला	जनवरी 28, 2041	फरवरी 05, 2041	अस्त
19	साढे साती	कन्या	फरवरी 06, 2041	सितम्बर 25, 2041	शिखर
20	साढे साती	तुला	सितम्बर 26, 2041	दिसम्बर 11, 2043	अस्त
21	साढे साती	तुला	जून 23, 2044	अगस्त 29, 2044	अस्त
22	छोटी पनौती	धनु	दिसम्बर 08, 2046	मार्च 06, 2049	
23	छोटी पनौती	धनु	जुलाई 10, 2049	दिसम्बर 03, 2049	
24	छोटी पनौती	मेष	अप्रैल 07, 2057	मई 27, 2059	
25	साढे साती	सिंह	अक्टूबर 13, 2065	फरवरी 03, 2066	उदय
26	साढे साती	सिंह	जुलाई 03, 2066	अगस्त 29, 2068	उदय
27	साढे साती	कन्या	अगस्त 30, 2068	नवम्बर 04, 2070	शिखर
28	साढे साती	तुला	नवम्बर 05, 2070	फरवरी 05, 2073	अस्त
29	साढे साती	तुला	मार्च 31, 2073	अक्टूबर 23, 2073	अस्त

॥ साढे साती रिपोर्ट ॥

क्रम संख्या	साढे साती / पनौती	शनि राशि	आरंभ दिनांक	अंत दिनांक	चरण
30	छोटी पनौती	धनु	जनवरी 17, 2076	जुलाई 10, 2076	
31	छोटी पनौती	धनु	अक्टूबर 12, 2076	जनवरी 14, 2079	
32	छोटी पनौती	मेष	मई 22, 2086	नवम्बर 09, 2086	
33	छोटी पनौती	मेष	फरवरी 08, 2087	जुलाई 17, 2088	
34	छोटी पनौती	मेष	अक्टूबर 31, 2088	अप्रैल 05, 2089	
35	साढे साती	सिंह	अगस्त 19, 2095	अक्टूबर 11, 2097	उदय
36	साढे साती	कन्या	अक्टूबर 12, 2097	मई 02, 2098	शिखर
37	साढे साती	सिंह	मई 03, 2098	जून 19, 2098	उदय
38	साढे साती	कन्या	जून 20, 2098	दिसम्बर 25, 2099	शिखर
39	साढे साती	तुला	दिसम्बर 26, 2099	मार्च 17, 2100	अस्त
40	साढे साती	कन्या	मार्च 18, 2100	सितम्बर 16, 2100	शिखर
41	साढे साती	तुला	सितम्बर 17, 2100	दिसम्बर 02, 2102	अस्त
42	छोटी पनौती	धनु	नवम्बर 30, 2105	फरवरी 24, 2108	
43	छोटी पनौती	धनु	जुलाई 29, 2108	नवम्बर 22, 2108	



सबसे डिटेल कुंडली

बृहत् कुंडली | 250+ पेज | सिर्फ ₹399

अभी ऑर्डर करें

॥ साढ़े साती रिपोर्ट ॥

शनि साढ़े साती: उदय चरण

यह शनि साढ़े साती का आरम्भिक दौर है। इस दौरान शनि चन्द्र से बारहवें भाव में स्थित होगा। आम तौर पर यह आर्थिक हानि, छुपे हुए शत्रुओं से नुकसान, नुरुद्देश्य यात्रा, विवाद और निर्धनता को दर्शाता है। इस कालखण्ड में आपको गुप्त शत्रुओं द्वारा पैदा की हुई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। सहकर्मियों से संबंध अच्छे नहीं रहेंगे और वे आपके कार्यक्षेत्र में बाधाएँ खड़ी कर सकते हैं। घरेलू मामलों में भी आपको चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, जिसके चलते तनाव और दबाव की स्थिति पैदा होगी। आपको अपने खर्चों पर नियन्त्रण करने की आवश्यकता है, अन्यथा आप अधिक बड़े आर्थिक संकट में फँस सकते हैं। इस दौरान लम्बी दूरी की यात्राएँ फलदायी नहीं रहेंगी। शनि का स्वभाव विलम्ब और तनाव पैदा करने का है। हालाँकि अन्ततः आपको परिणाम जरूर मिलेगा। इसलिए धैर्य रखें और सही समय की प्रतीक्षा करें। इस दौर को सीखने का समय समझें और कड़ी मेहनत करें, परिस्थितियाँ स्वतः सही होती चली जाएंगी। इस समय व्यवसाय में कोई भी बड़ा खतरा या चुनौती न मोल लें।

शनि साढ़े साती: शिखर चरण

यह शनि साढ़े साती का चरम है। प्रायः यह दौर सबसे मुश्किल होता है। इस समय चन्द्र पर गोचर करता हुआ शनि स्वास्थ्य-संबंधी समस्या, चरित्र-हनन की कोशिश, रिश्तों में दरार, मानसिक अशान्ति और दुःख की ओर संकेत करता है। इस दौरान आप सफलता पाने में कठिनाई महसूस करेंगे। आपको अपनी कड़ी मेहनत का परिणाम नहीं मिलेगा और खुद को बंधा हुआ अनुभव करेंगे। आपकी सेहत और प्रतिरक्षा-तन्त्र पर्याप्त सशक्त नहीं होंगे। क्योंकि पहला भाव स्वास्थ्य को दर्शाता है इसलिए आपको नियमित व्यायाम और अपनी सेहत का खास खयाल रखने की जरूरत है, नहीं तो आप संक्रामक रोगों की चपेट में आ सकते हैं। साथ ही आपको मानसिक अवसाद और अज्ञात भय या फोबिया आदि का सामना भी करना पड़ सकता है। संभव है कि इस काल-खण्ड में आपकी सोच, कार्य और निर्णय करने की क्षमता में स्पष्टता का अभाव रहे। संतोषपूर्वक परिस्थितियों को स्वीकार करना और मूलभूत काम ठीक तरह से करना आपको इस संकट की घड़ी से निकाल सकता है।

शनि साढ़े साती: अस्त चरण

यह शनि साढ़े साती का अन्तिम चरण है। इस समय शनि चन्द्र से दूसरे भाव में गोचर कर रहा होगा, जो व्यक्तिगत और वित्तीय मोर्चे पर कठिनाइयों को इंगित करता है। साढ़े साती के दो मुश्किल चरणों से गुजरने के बाद आप कुछ राहत महसूस करने लगेंगे। फिर भी इस दौरान गलतफहमी आर्थिक दबाव देखा जा सकता है। व्यय में वृद्धि होगी और आपको इसपर लगाम लगाने की अब भी जरूरत है। अचानक हुई आर्थिक हानि और चोरी की संभावना को भी इस दौरान नहीं नकारा जा सकता है। आपकी सोच नकारात्मक हो सकती है। आपको उत्साह के साथ परिस्थितियों का सामना करना चाहिए। आपको व्यक्तिगत और पारिवारिक तौर पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, नहीं तो बड़ी परेशानियाँ पैदा हो सकती हैं। विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई-लिखाई पर थोड़ा नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और उन्हें पिछले स्तर पर बने रहने के लिए अधिक परिश्रम की जरूरत होगी। परिणाम धीरे-धीरे और प्रायः हमेशा विलम्ब से प्राप्त होंगे। यह काल-खण्ड खतरे को भी दर्शाता है, अतः गाड़ी चलाते समय विशेष सावधानी अपेक्षित है। यदि संभव हो तो मांसाहार और मदिरापान से दूर रहकर शनि को प्रसन्न रखें। यदि आप समझदारी से काम लेंगे, तो घरेलू व आर्थिक मामलों में आने वाली परेशानियों को भली-भांति हल करने में सफल रहेंगे।

नोट: उपर्युक्त भविष्यवाणियाँ सामान्य प्रकृति की हैं और आम धारणाओं पर आधारित हैं, जिसके अनुसार साढ़े साती अनिष्टकारक होती है। किन्तु हमारे अनुभव के अनुसार प्रत्येक स्थिति में ऐसा नहीं होता है और हम पाठकों से यह आलेख पढ़ने का अनुरोध करते हैं। सिर्फ साढ़े साती के आधार पर कोई भी निष्कर्ष निकालना सही नहीं है और उसके गलत होने की काफी संभावना रहती है। साढ़े साती की अवधि अच्छी रहेगी या बुरी, यह तय करने से पहले कुछ अन्य चीजों जैसे वर्तमान में चल रही दशा और शनि के स्वभाव आदि के विश्लेषण की भी आवश्यकता होती है। आपको सलाह दी जाती है कि उपर्युक्त फलकथन को गंभीरता से न लें और यदि आपके मन में कुछ शंका है, तो किसी अच्छे ज्योतिषी से परामर्श लें।

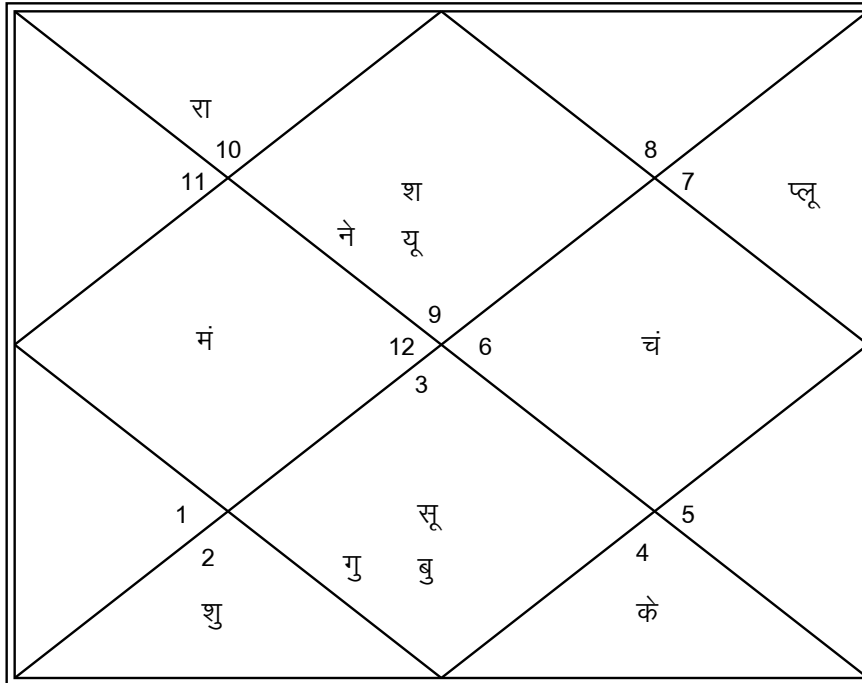
॥ कालसर्प दोष ॥

कालसर्प दोष – योग

प्रचलित परिभाषा के अनुसार जब जन्म कुंडली में सम्पूर्ण ग्रह राहु और केतु ग्रह के बीच स्थित हों तो ऐसी स्थिति को ज्योतिषी कालसर्प दोष का नाम देते हैं। वर्तमान में इस दोष की चर्चा ज्योतिषियों के मध्य जोरों पर है। किसी भी जातक के जीवन में कोई भी परेशानी हो और उसकी कुण्डली में यह योग या दोष हो तो अन्य पहलुओं का परीक्षण किए बगैर बहुधा ज्योतिषी यह निष्कर्ष सुना देते हैं कि संबंधित जातक पर आने वाली उक्त प्रकार की परेशानियां कालसर्प योग के कारण हो रही हैं। परंतु वास्तविकता यह है कि यदि कुण्डली में अन्य ग्रहों की स्थितियां ठीक हों तो अकेला कालसर्प दोष नुकसानदायी नहीं होता। बल्कि वह अन्य ग्रहों के शुभफलदायी होने पर यह दोष योग की तरह काम करता है और उन्नति में सहायक होता है। वहीं अन्य ग्रहों के अशुभफलदायी होने पर यह अशुभफलों में वृद्धि करता है। अतः मात्र कालसर्प दोष का नाम सुनकर भयभीत होना ठीक नहीं है बल्कि इसका ज्योतिषीय विश्लेषण करवाकर उससे मिलने वाले प्रभावों और दुष्प्रभावों की जानकारी लेकर उचित उपाय करना श्रेयष्कर होगा। इस मामले में सबसे ज्यादा ध्यान देने वाली बात यह है कि इस योग का असर अलग-अलग जातकों पर अलग-अलग प्रकार से देखने को मिलता है। क्योंकि इसका असर किस भाव में कौन सी राशि स्थित है और उसमें कौन-कौन ग्रह बैठे हैं और उनका बलाबल कितना है, इन विन्दुओं के आधार पर पड़ता है। साथ ही कालसर्प दोष या योग किन-किन भावों के मध्य बन रहा है, इसके अनुसार भी इस दोषयोग का असर पड़ता है। भाव स्थिति के अनुसार इस योग या दोष को बारह प्रकार का माना गया है।

परिणाम: आपकी कुण्डली कालसर्प दोष – योग से मुक्त है।

लग्न चक्र:



फ्री में चैट करें

पहली चैट फ्री – विद्वान ज्योतिषियों के साथ

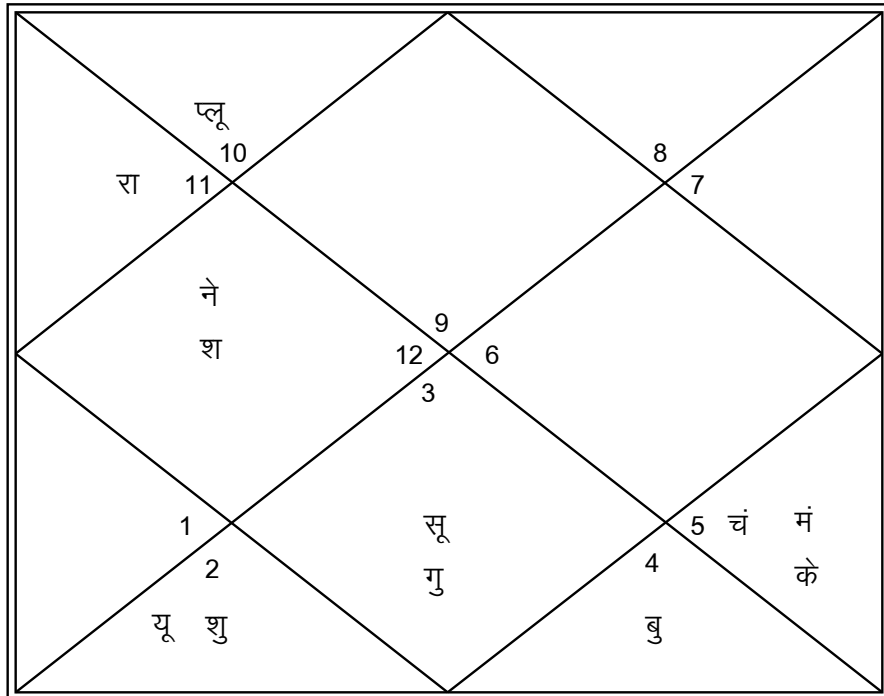
अभी चैट करें



॥ वर्षफल विवरण ॥

जन्म		वर्ष
Male	लिंग	Male
29 / 6 / 1990	जन्म दिनांक	29 / 6 / 2025
19:30:56	जन्म समय	18:51:46
शुक्रवार	जन्म दिन	रविवार
Maharashtra	जन्म स्थान	Maharashtra
18	अक्षांश	18
74	रेखांश	74
00 : 34 : 00	स्थानीय समय संशोधन	00 : 34 : 00
00 : 00 : 00	युद्ध कालिक संशोधन	00 : 00 : 00
18 : 56 : 55	स्थानीय औसत समय	18 : 17 : 46
06 : 01 : 20	सूर्योदय	06 : 01 : 34
19 : 13 : 19	सूर्यास्त	19 : 13 : 27
धनु	लग्न	धनु
गुरु	लग्नस्वामी	गुरु
कन्या	राशि	सिंह
बुध	राशि स्वामी	सूर्य
हस्त	नक्षत्र	मघा
चंद्र	नक्षत्र स्वामी	केतु
वरीयान	योग	सिं
विष्टि	करण	भाव
कर्क	सूर्य राशि (पाश्चात्य)	कर्क
023-43-25	अयनांश	024-12-45
लाहिरी	अयनांश नाम	लाहिरी

ताजिक वर्षफल कुण्डली



॥ वर्षफल विवरण ॥

मुन्था: 12 भाव

खर्चों में बढ़ोत्तरी होगी और वे अपनी हदें पार कर जाएंगे। आर्थिक दृष्टि से परेशानियों भरा समय है। धन हानि व वित्तीय दुर्गमता का सामना करना पड़ सकता है। आप कुसंगति में कुछ व्यवसनों के शिकार हो सकते हैं। आपको अपनी परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। पद हानि अथवा स्थानांतरण की भी संभावना है।

जून 29, 2025 – जुलाई 18, 2025 दशा सूर्य

सूर्य भाव संख्या 7

यह एक कठिन काल सिद्ध होगा। कड़ी मेहनत का अच्छा फल नहीं मिलेगा। व्यवसायिक या व्यापार के साथी नुकसान करेंगे और आपके लिये समस्याएँ पैदा कर देंगे। घरेलु झंझटों में अपने मिजाज पर काबू रखें अन्यथा अप्रीतिकर स्थितियाँ झेलनी पड़ सकती हैं। आप भी मानसिक रूप से तनावग्रस्त और बीमार रह सकते हैं।

जुलाई 18, 2025 – अगस्त 17, 2025 दशा चन्द्र

चन्द्र भाव संख्या 9

विद्वान् एवम् पढ़े लिखे लोगों से सम्मान व प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। विदेशियों से संबंध सफलदायक रहेंगे। लम्बी यात्राओं की भी संभावना है। धार्मिक कृत्य करने की प्रवृत्ति रहेगी। सुखी जीवन बितायेंगे। मां बाप से संबंध अति मधुर रहेंगे।

अगस्त 17, 2025 – सितम्बर 07, 2025 दशा मंगल

मंगल भाव संख्या 9

बड़े बूढ़ों से सहयोग प्राप्त करेंगे। सुदूर स्थलों तक की गई लम्बी यात्राएं सफलदायक सिद्ध होंगी। आमदनी बढ़ेगी और आय के नये स्रोत प्राप्त होंगे। यद्यपि खर्चे भी बढ़ेंगे लेकिन आमदनी से अधिक नहीं होंगे। सट्टे के द्वारा आय होने की भी संभावना है। इस समय का पूरा सदुपयोग करें।

सितम्बर 07, 2025 – नवम्बर 01, 2025 दशा राहू

राहू भाव संख्या 3

अपनी उद्यम शक्ति और महती ऊर्जा के द्वारा आप किसी भी काम को बहुत अच्छे तरीके से पूरा करने में सक्षम रहेंगे। आपके उद्देश्य की दृढ़ता सराही जायेगी। अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण विपरीत परिस्थिति में भी आपको मति भ्रम नहीं होगा और सही काम करेंगे। आपका सामाजिक दायरा बढ़ेगा और आपकी प्रतिष्ठा में भी बढ़ोत्तरी होगी। काफी भ्रमण करना पड़ेगा। भाई बहिनों से संबंध अच्छे रहेंगे। संचार माध्यम द्वारा आपको उत्साहवर्धक समाचार मिलेगा। व्यापार और लेन देन के सौदों की बहुत अच्छे रहने की संभावना है। अगर नौकरी में हैं तो शीघ्र पदोन्नति होनी चाहिये।

॥ वर्षफल विवरण ॥

नवम्बर 01, 2025 – दिसम्बर 20, 2025 दशा गुरु

गुरु भाव संख्या 7

इस अवधि में आप वैवाहिक सुख भोगेंगे। व्यापार या नौकरी इत्यादि के विकासशील होने की अच्छी संभावनाएं रहेंगी। बहु प्रतीक्षित यात्रा करेंगे। परिवार का वातावरण भी सौमनस्यपूर्ण रहेगा। इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। आप निडर रहेंगे और शत्रुगण सामने आने की हिम्मत नहीं करेंगे। दर्शन व साहित्य में रुचि जागृत होगी। विद्वानों से सम्पर्क बढ़ेंगे। आप अत्यधिक सम्मानप्रिय व्यक्ति समझे जायेंगे और विख्यात होंगे।

दिसम्बर 20, 2025 – फरवरी 15, 2026 दशा शनि

शनि भाव संख्या 4

आप पर ऐसी बातों के झुठे इल्जाम लगाए जा सकते हैं जिनमें आपका सहयोग नगण्य रहा हो। पारिवारिक सुख का भी अभाव रहेगा। प्रयासों में असफलता अवसाद पैदा कर देगी। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अगर कोई लंबी बीमारी भोग रहे हैं तो पूरे परहेज से रहें। आपके विरोधी आपकी छवि बिगाड़ने का प्रयास करेंगे। बहसों में न उलझें तो ठीक रहेगा। सांसारिक सुखों के लिहाज से यह समय अच्छा नहीं है फिर भी धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में लगे रहने से कुछ राहत महसूस होगी।

फरवरी 15, 2026 – अप्रैल 08, 2026 दशा बुध

बुध भाव संख्या 8

प्रयत्नों के बावजूद असफलता आपको निराश करेगी। आपको बहुत मेहनत करनी पड़ेगी क्योंकि काम का बोझ बहुत रहेगा। छोटी छोटी बातों को लेकर विवाद बढ़ने की संभावना है। बेकार के व अमहत्वपूर्ण कामों में आप अपनी शक्ति और समय व्यय करेंगे। जल्दी धन कमाने की अपनी प्रवृत्ति पर अंकुश लगायें। स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण कुछ काम आप नहीं कर पायेंगे। पारिवारिक जीवन में तनावग्रस्त रहेंगे। वैसे इस अवधि में गूढ़ एवं परामनोवैज्ञानिक अनुभव आपको प्राप्त होंगे। बेकार की यात्राओं से बचें।

अप्रैल 08, 2026 – अप्रैल 29, 2026 दशा केतु

केतु भाव संख्या 9

किसी संस्थान के प्रमुख व्यक्ति के आप सम्पर्क में आयेंगे। औरों के प्रति जनकल्याण की भावना से काम करने की प्रवृत्ति होगी। किसी नयी सृजनात्मक उपलब्धि के कारण आपको मान्यता मिल सकती है। वैसे इस अवधि में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और सम्मान में इजाफा होगा। आप अति सम्मानीय व्यक्ति समझे जायेंगे। यात्रा का बहुत महत्व होगा। आपकी धर्म एवम् अध्यात्म की ओर झुकने की प्रवृत्ति में भावनात्मक गहराई का समावेश होगा। पारिवारिक जीवन हर्षोल्लास से सम्पन्न रहेगा। परिवार में कोई मंगल कृत्य होगा। इस अवधि का पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न करें।

अप्रैल 29, 2026 – जून 29, 2026 दशा शुक्र

शुक्र भाव संख्या 6

इस अवधि में वासनापटक विचार सिर्फ आपको अवसादित ही नहीं करेंगे जलील भी करवा सकते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण आपकी नित्यचर्चा में भी व्यवधान उपस्थित हो जायेगा। वैसे नौकरी के हालात अच्छे रहेंगे। यद्यपि काम का बोझ थकाने वाला होगा। स्त्री वर्ग से आपका व्यवहार मधुर नहीं रह पायेगा। विरोधी प्रबल होंगे। विपरीत परिस्थितियों में प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास प्राप्त करने का प्रयत्न करें। भारी व्यय होने की भी संभावना है।

॥ विंशोत्तरी महादशा फल ॥

चन्द्र महादशा फल (जन्म से जून 29, 2000)

चन्द्र कन्या आपके दशम भाव में स्थित है:

आप अपने ही विचारों और योजनाओं को रचनात्मक रूप दे सकेंगे। नौकरी या व्यापार से संबंधित कुछ ठोस परिणाम सामने आयेंगे। आपको सारे ही उद्यमों में सफलता निश्चित है। अपने से वरिष्ठ लोगों या पर्यवेक्षकों के साथ अति मधुर संबंध रहेंगे। इस समय का पूरा सदुपयोग कीजिये।

मंगल महादशा फल (जून 29, 2000 से जून 29, 2007)

मंगल मीन आपके चतुर्थ भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप मानसिक तनावों और चारों से ग्रसित रहेंगे। सुख अचल सम्पत्ती, वाहन सुख एवम् स्त्रीयों तथा मित्रों के साथ से वंचित रहेंगे। आर्थिक रूप से यह समय अच्छा नहीं है। इसलिये व्यय भी अधिक होगा। कुछ गुप्त गतिविधियों के लिये भी खर्च करना पड़ेगा। अचानक हानि होने की भी संभावना है।

राहू महादशा फल (जून 29, 2007 से जून 29, 2025)

राहू मकर आपके द्वितीय भाव में स्थित है:

रोजमर्रा के जीवन में पैसा वसूल करने में आपको परेशानी हो सकती है। किसी भी उद्यम की प्रायोजना की पूरी जांच परख कर के ही पूंजी निवेश की सोचें। घर का वातावरण भी तनावपूर्ण रहेगा। परिवारजनों से कभी कभी मतभेद रहेगा। इस अवधि में आंख की पीड़ा भी आप भोग सकते हैं। साधारण रूप से स्वास्थ्य ठीक रहेगा। शत्रु नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। घर के मामलों में एक असुरक्षा की भावना से आक्रान्त रहेंगे।

गुरु महादशा फल (जून 29, 2025 से जून 29, 2041)

गुरु मिथुन आपके सप्तम भाव में स्थित है:

इस अवधि में आप वैवाहिक सुख भोगेंगे। व्यापार या नौकरी इत्यादि के विकासशील होने की अच्छी संभावनाएं रहेंगी। बहु प्रतीक्षित यात्रा करेंगे। परिवार का वातावरण भी सौमनस्यपूर्ण रहेगा। इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। आप निडर रहेंगे और शत्रुगण सामने आने की हिम्मत नहीं करेंगे। दर्शन व साहित्य में रुचि जागृत होगी। विद्वानों से सम्पर्क बढ़ेंगे। आप अत्यधिक सम्मानप्रिय व्यक्ति समझे जायेंगे और विख्यात होंगे।

शनि महादशा फल (जून 29, 2041 से जून 29, 2060)

शनि धनु आपके प्रथम भाव में स्थित है:

आपके हर काम में अड़चनें आएंगी और देरी होगी। कभी कभी असुरक्षा की भावना से आक्रान्त रहेंगे। काम का बोझ बहुत रहेगा और फालतू के कामों में भी आप फंसे रह सकते हैं। आपका स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहेगा। पारिवारिक जीवन सुखद नहीं रहेगा। रिश्तेदारों के स्वास्थ्य के कारण आप चिन्तित रह सकते हैं। भागीदारों या सहयोगियों की लापरवाही के कारण आपको धक्का पहुंच सकता है। वैसे इस अवधि का आखिरी हिस्सा आपको कुछ राहत देगा। आशावादी होना निराशावादी होने से सदैव अच्छा है।

॥ विंशोत्तरी महादशा फल ॥

बुध महादशा फल (जून 29, 2060 से जून 29, 2077)

बुध मिथुन आपके सप्तम भाव में स्थित है:

इस अवधि में आपकी प्रसिद्धि एवम् सम्मान में इजाफा होगा। विद्वानों के साथ रहने का मौका आयेगा। आपका व्यापार या व्यवसाय बढ़ेगा और चमकेगा। स्त्री वर्ग से आपके क्षेत्र में सहायता मिलेगी। सुखद यात्रा की भी संभावना है। लाभप्रद सौदा करेंगे और आपके भागीदार व सहयोगी आपको अपना बेहतर सहयोग देंगे। किसी प्रतिस्पर्धा में भी सफल रहना निश्चित है।

केतु महादशा फल (जून 29, 2077 से जून 29, 2084)

केतु कर्क आपके अष्टम भाव में स्थित है:

इस अवधि में अचानक लाभ होने की संभावना है। अगर वसीयत प्राप्त करने की संभावना है या आप उसको प्राप्त करने के लिये इच्छुक हैं तो आप उसे प्राप्त कर सकते हैं। आपका मन धार्मिक क्रियाकलापों की ओर झुका रहेगा। कुछ अतीन्द्रिय अनुभव भी प्राप्त कर सकते हैं। पारिवारिक माहौल सौहार्दपूर्ण रहेगा। अचानक यात्राएं सफलदायक सिद्ध होंगी। आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और सम्मान में इजाफा होगा। छोटी मोटी बीमारियां मानसिक शांति भंग कर सकती हैं। आप तीर्थाटन पर जा सकते हैं। कुल मिलाकर सुखी रहेंगे।

शुक्र महादशा फल (जून 29, 2084 से जून 29, 2104)

शुक्र वृषभ आपके षष्ठ भाव में स्थित है:

इस अवधि में वासनापटक विचार सिर्फ आपको अवसादित ही नहीं करेंगे जलील भी करवा सकते हैं। स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं के कारण आपकी नित्यचर्चा में भी व्यवधान उपस्थित हो जायेगा। वैसे नौकरी के हालात अच्छे रहेंगे। यद्यपि काम का बोझ थकाने वाला होगा। स्त्री वर्ग से आपका व्यवहार मधुर नहीं रह पायेगा। विरोधी प्रबल होंगे। विपरीत परिस्थितियों में प्रतिरोधात्मक शक्ति का विकास प्राप्त करने का प्रयत्न करें। भारी व्यय होने की भी संभावना है।

सूर्य महादशा फल (जून 29, 2104 से जून 29, 2110)

सूर्य मिथुन आपके सप्तम भाव में स्थित है:

यह एक कठिन काल सिद्ध होगा। कड़ी मेहनत का अच्छा फल नहीं मिलेगा। व्यवसायिक या व्यापार के साथी नुकसान करेंगे और आपके लिये समस्यायें पैदा कर देंगे। घरेलु झंझटों में अपने मिजाज पर काबू रखें अन्यथा अप्रीतिकर स्थितियां झेलनी पड़ सकती हैं। आप भी मानसिक रूप से तनावग्रस्त और बीमार रह सकते हैं।

॥ योगिनी दशा ॥

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	10. 3.92
अंत	28. 6.98
सं	10. 3.92
मं	30. 5.92
पिं	9.11.92
ध	9. 7.93
भ्र	29. 5.94
भद्रि	9. 7.95
उल्	8.11.96
सि	28. 6.98

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.98
अंत	28. 6.99
मं	7. 6.98
पिं	27. 6.98
ध	27. 7.98
भ्र	6. 9.98
भद्रि	26.10.98
उल्	26.12.98
सि	8. 3.99
सं	28. 6.99

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.99
अंत	28. 6.01
पिं	8. 7.99
ध	8. 9.99
भ्र	28.11.99
भद्रि	9. 3.00
उल्	9. 7.00
सि	29.11.00
सं	9. 5.01
मं	28. 6.01

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.01
अंत	28. 6.04
ध	29. 8.01
भ्र	29.12.01
भद्रि	29. 5.02
उल्	29.11.02
सि	28. 6.03
सं	28. 2.04
मं	28. 3.04
पिं	28. 6.04

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.04
अंत	28. 6.08
भ्र	7.11.04
भद्रि	27. 5.05
उल्	27. 1.06
सि	6.11.06
सं	26. 9.07
मं	5.11.07
पिं	25. 1.08
ध	28. 6.08

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.08
अंत	28. 6.13
भद्रि	4. 2.09
उल्	4.12.09
सि	24.11.10
सं	3. 1.12
मं	23. 2.12
पिं	2. 6.12
ध	2.11.12
भ्र	28. 6.13

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.13
अंत	28. 6.19
उल्	22. 5.14
सि	22. 7.15
सं	21.11.16
मं	21. 1.17
पिं	21. 5.17
ध	21.11.17
भ्र	21. 7.18
भद्रि	28. 6.19

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.19
अंत	28. 6.26
सि	1.10.20
सं	21. 4.22
मं	1. 7.22
पिं	21.11.22
ध	21. 6.23
भ्र	31. 3.24
भद्रि	20. 3.25
उल्	28. 6.26

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.26
अंत	28. 6.34
सं	1. 3.28
मं	21. 5.28
पिं	31.10.28
ध	30. 6.29
भ्र	20. 5.30
भद्रि	30. 6.31
उल्	30.10.32
सि	28. 6.34

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.34
अंत	28. 6.35
मं	30. 5.34
पिं	19. 6.34
ध	19. 7.34
भ्र	29. 8.34
भद्रि	19.10.34
उल्	19.12.34
सि	1. 3.35
सं	28. 6.35

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.35
अंत	28. 6.37
पिं	1. 7.35
ध	1. 9.35
भ्र	21.11.35
भद्रि	2. 3.36
उल्	2. 7.36
सि	22.11.36
सं	2. 5.37
मं	28. 6.37

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.37
अंत	28. 6.40
ध	22. 8.37
भ्र	22.12.37
भद्रि	22. 5.38
उल्	22.11.38
सि	21. 6.39
सं	21. 2.40
मं	21. 3.40
पिं	28. 6.40

॥ योगिनी दशा ॥

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.40
अंत	28. 6.44
भ्र	31.10.40
भद्रि	20. 5.41
उल्	20. 1.42
सि	30.10.42
सं	19. 9.43
मं	29.10.43
पिं	18. 1.44
ध	28. 6.44

भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.44
अंत	28. 6.49
भद्रि	28. 1.45
उल्	28.11.45
सि	17.11.46
सं	27.12.47
मं	16. 2.48
पिं	26. 5.48
ध	26.10.48
भ्र	28. 6.49

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.49
अंत	28. 6.55
उल्	16. 5.50
सि	16. 7.51
सं	15.11.52
मं	15. 1.53
पिं	15. 5.53
ध	15.11.53
भ्र	15. 7.54
भद्रि	28. 6.55

सि 7 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.55
अंत	28. 6.62
सि	25. 9.56
सं	14. 4.58
मं	24. 6.58
पिं	13.11.58
ध	13. 6.59
भ्र	23. 3.60
भद्रि	15. 3.61
उल्	28. 6.62

सं 8 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.62
अंत	28. 6.70
सं	25. 2.64
मं	15. 5.64
पिं	25.10.64
ध	25. 6.65
भ्र	15. 5.66
भद्रि	25. 6.67
उल्	25.10.68
सि	28. 6.70

मं 1 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.70
अंत	28. 6.71
मं	25. 5.70
पिं	14. 6.70
ध	14. 7.70
भ्र	24. 8.70
भद्रि	14.10.70
उल्	14.12.70
सि	24. 2.71
सं	28. 6.71

पिं 2 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.71
अंत	28. 6.73
पिं	24. 6.71
ध	24. 8.71
भ्र	13.11.71
भद्रि	23. 2.72
उल्	23. 6.72
सि	12.11.72
सं	22. 4.73
मं	28. 6.73

ध 3 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.73
अंत	28. 6.76
ध	12. 8.73
भ्र	12.12.73
भद्रि	12. 5.74
उल्	12.11.74
सि	11. 6.75
सं	11. 2.76
मं	11. 3.76
पिं	28. 6.76

भ्र 4 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.76
अंत	28. 6.80
भ्र	21.10.76
भद्रि	11. 5.77
उल्	11. 1.78
सि	21.10.78
सं	10. 9.79
मं	20.10.79
पिं	9. 1.80
ध	28. 6.80

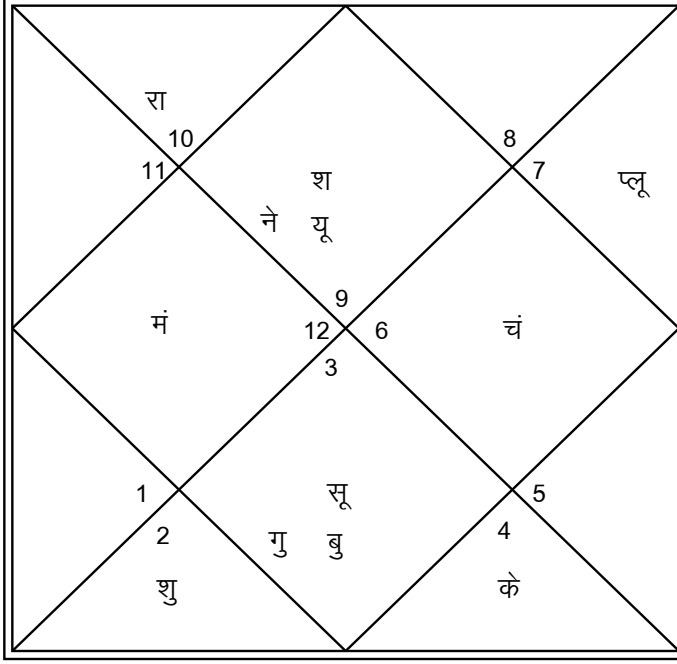
भद्रि 5 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.80
अंत	28. 6.85
भद्रि	19. 1.81
उल्	19.11.81
सि	8.11.82
सं	18.12.83
मं	7. 2.84
पिं	17. 5.84
ध	17.10.84
भ्र	28. 6.85

उल् 6 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.85
अंत	28. 6.91
उल्	7. 5.86
सि	7. 7.87
सं	6.11.88
मं	6. 1.89
पिं	6. 5.89
ध	6.11.89
भ्र	6. 7.90
भद्रि	28. 6.91

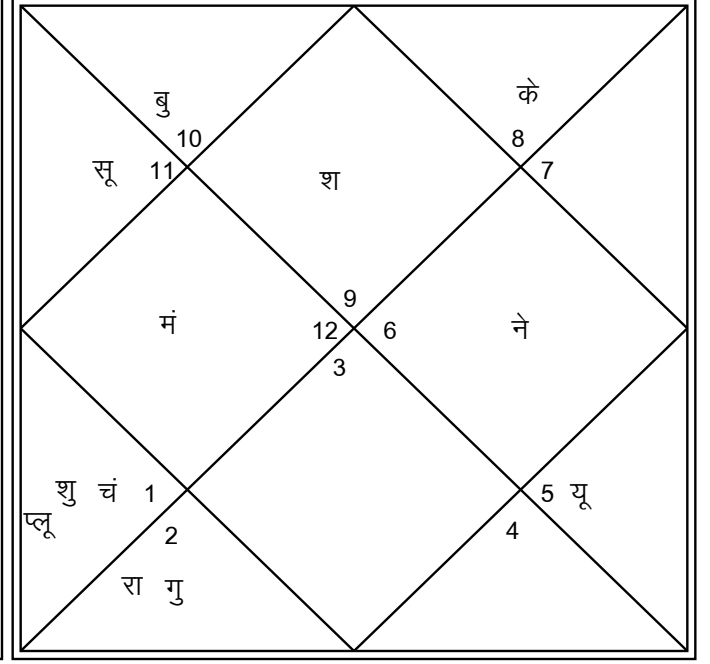
सि 7 वर्ष	
आरम्भ	28. 6.91
अंत	28. 6.98
सि	16. 9.92
सं	5. 4.94
मं	15. 6.94
पिं	4.11.94
ध	4. 6.95
भ्र	14. 3.96
भद्रि	6. 3.97
उल्	28. 6.98

॥ जैमिनी पद्धति – कारकांश एवं स्वांश ॥

कारकांश चक्र



स्वांश चक्र



कारक

कारक	स्थिर	चर
आत्म	सूर्य	शनि
आमात्य	बुध	मंगल
भ्रात	मंगल	गुरु
मातृ	चंद्र	सूर्य
पितृ	गुरु	शुक्र
ज्ञाति	शनि	बुध
दारा	शुक्र	चंद्र

अवस्था

ग्रह	जागृत	बलादि	दीप्तादि
सूर्य	स्वप्न	युवा	शान्त
चंद्र	स्वप्न	वृद्ध	शान्त
मंगल	जाग्रत	बाल	दीन
बुध	स्वप्न	कुमार	स्वत
गुरु	सुसुप्त	मृत	दीन
शुक्र	स्वप्न	वृद्ध	शान्त
शनि	सुसुप्त	मृत	स्वत

॥ चरदशा ॥

चर महादशा

धनु 06 वर्ष	29. 6.90	29. 6.96
वृश्चिक 04 वर्ष	29. 6.96	29. 6.00
तुला 07 वर्ष	29. 6.00	29. 6.07

कन्या 03 वर्ष	29. 6.07	29. 6.10
सिंह 02 वर्ष	29. 6.10	29. 6.12
कर्क 10 वर्ष	29. 6.12	29. 6.22

मिथुन 12 वर्ष	29. 6.22	29. 6.34
वृष 12 वर्ष	29. 6.34	29. 6.46
मेष 11 वर्ष	29. 6.46	29. 6.57

मीन 09 वर्ष	29. 6.57	29. 6.66
कुंभ 01 वर्ष	29. 6.66	29. 6.67
मकर 01 वर्ष	29. 6.67	29. 6.68

चर अन्तरदशा

धनु 6 वर्ष		
वृश्चिक	29.6.90	29.12.90
तुला	29.12.90	29. 6.91
कन्या	29.6.91	29.12.91
सिंह	29.12.91	29. 6.92
कर्क	29.6.92	29.12.92
मिथुन	29.12.92	29. 6.93
वृष	29.6.93	29.12.93
मेष	29.12.93	29. 6.94
मीन	29.6.94	29.12.94
कुंभ	29.12.94	29. 6.95
मकर	29.6.95	29.12.95
धनु	29.12.95	29. 6.96

वृश्चिक 4 वर्ष		
तुला	29.6.96	29.10.96
कन्या	29.10.96	28. 2.97
सिंह	28.2.97	28. 6.97
कर्क	28.6.97	28.10.97
मिथुन	28.10.97	28. 2.98
वृष	28.2.98	28. 6.98
मेष	28.6.98	28.10.98
मीन	28.10.98	28. 2.99
कुंभ	28.2.99	28. 6.99
मकर	28.6.99	28.10.99
धनु	28.10.99	28. 2.00
वृश्चिक	28.2.00	28. 6.00

तुला 7 वर्ष		
वृश्चिक	28.6.00	28. 1.01
धनु	28.1.01	28. 8.01
मकर	28.8.01	28. 3.02
कुंभ	28.3.02	28.10.02
मीन	28.10.02	28. 5.03
मेष	28.5.03	28.12.03
वृष	28.12.03	28. 7.04
मिथुन	28.7.04	28. 2.05
कर्क	28.2.05	28. 9.05
सिंह	28.9.05	28. 4.06
कन्या	28.4.06	28.11.06
तुला	28.11.06	28. 6.07

फ्री में चैट करें

पहली चैट फ्री – विद्वान ज्योतिषियों के साथ

अभी चैट करें



॥ चरदशा ॥

कन्या 3 वर्ष		
तुला	28.6.07	28. 9.07
वृश्चिक	28.9.07	28.12.07
धनु	28.12.07	28. 3.08
मकर	28.3.08	28. 6.08
कुंभ	28.6.08	28. 9.08
मीन	28.9.08	28.12.08
मेष	28.12.08	28. 3.09
वृष	28.3.09	28. 6.09
मिथुन	28.6.09	28. 9.09
कर्क	28.9.09	28.12.09
सिंह	28.12.09	28. 3.10
कन्या	28.3.10	28. 6.10

सिंह 2 वर्ष		
कन्या	28.6.10	28. 8.10
तुला	28.8.10	28.10.10
वृश्चिक	28.10.10	28.12.10
धनु	28.12.10	28. 2.11
मकर	28.2.11	28. 4.11
कुंभ	28.4.11	28. 6.11
मीन	28.6.11	28. 8.11
मेष	28.8.11	28.10.11
वृष	28.10.11	28.12.11
मिथुन	28.12.11	28. 2.12
कर्क	28.2.12	28. 4.12
सिंह	28.4.12	28. 6.12

कर्क 10 वर्ष		
मिथुन	28.6.12	28. 4.13
वृष	28.4.13	28. 2.14
मेष	28.2.14	28.12.14
मीन	28.12.14	28.10.15
कुंभ	28.10.15	28. 8.16
मकर	28.8.16	28. 6.17
धनु	28.6.17	28. 4.18
वृश्चिक	28.4.18	28. 2.19
तुला	28.2.19	28.12.19
कन्या	28.12.19	28.10.20
सिंह	28.10.20	28. 8.21
कर्क	28.8.21	28. 6.22

मिथुन 12 वर्ष		
वृष	28.6.22	28. 6.23
मेष	28.6.23	28. 6.24
मीन	28.6.24	28. 6.25
कुंभ	28.6.25	28. 6.26
मकर	28.6.26	28. 6.27
धनु	28.6.27	28. 6.28
वृश्चिक	28.6.28	28. 6.29
तुला	28.6.29	28. 6.30
कन्या	28.6.30	28. 6.31
सिंह	28.6.31	28. 6.32
कर्क	28.6.32	28. 6.33
मिथुन	28.6.33	28. 6.34

वृष 12 वर्ष		
मेष	28.6.34	28. 6.35
मीन	28.6.35	28. 6.36
कुंभ	28.6.36	28. 6.37
मकर	28.6.37	28. 6.38
धनु	28.6.38	28. 6.39
वृश्चिक	28.6.39	28. 6.40
तुला	28.6.40	28. 6.41
कन्या	28.6.41	28. 6.42
सिंह	28.6.42	28. 6.43
कर्क	28.6.43	28. 6.44
मिथुन	28.6.44	28. 6.45
वृष	28.6.45	28. 6.46

मेष 11 वर्ष		
वृष	28.6.46	28. 5.47
मिथुन	28.5.47	28. 4.48
कर्क	28.4.48	28. 3.49
सिंह	28.3.49	28. 2.50
कन्या	28.2.50	28. 1.51
तुला	28.1.51	28.12.51
वृश्चिक	28.12.51	28.11.52
धनु	28.11.52	28.10.53
मकर	28.10.53	28. 9.54
कुंभ	28.9.54	28. 8.55
मीन	28.8.55	28. 7.56
मेष	28.7.56	28. 6.57

मीन 9 वर्ष		
मेष	28.6.57	28. 3.58
वृष	28.3.58	28.12.58
मिथुन	28.12.58	28. 9.59
कर्क	28.9.59	28. 6.60
सिंह	28.6.60	28. 3.61
कन्या	28.3.61	28.12.61
तुला	28.12.61	28. 9.62
वृश्चिक	28.9.62	28. 6.63
धनु	28.6.63	28. 3.64
मकर	28.3.64	28.12.64
कुंभ	28.12.64	28. 9.65
मीन	28.9.65	28. 6.66

कुंभ 1 वर्ष		
मीन	28.6.66	28. 7.66
मेष	28.7.66	28. 8.66
वृष	28.8.66	28. 9.66
मिथुन	28.9.66	28.10.66
कर्क	28.10.66	28.11.66
सिंह	28.11.66	28.12.66
कन्या	28.12.66	28. 1.67
तुला	28.1.67	28. 2.67
वृश्चिक	28.2.67	28. 3.67
धनु	28.3.67	28. 4.67
मकर	28.4.67	28. 5.67
कुंभ	28.5.67	28. 6.67

मकर 1 वर्ष		
धनु	28.6.67	28. 7.67
वृश्चिक	28.7.67	28. 8.67
तुला	28.8.67	28. 9.67
कन्या	28.9.67	28.10.67
सिंह	28.10.67	28.11.67
कर्क	28.11.67	28.12.67
मिथुन	28.12.67	28. 1.68
वृष	28.1.68	28. 2.68
मेष	28.2.68	28. 3.68
मीन	28.3.68	28. 4.68
कुंभ	28.4.68	28. 5.68
मकर	28.5.68	28. 6.68

॥ गोचर फल (24-10-2025) ॥

सूर्य तुलाराशि में आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

आपकी इच्छाएं व महत्वाकांक्षाएँ पूरी होंगी। मित्रों और रिश्तेदारों से सहायता पायेंगे। इस समय के सौदे सफलदायक सिद्ध होंगे। अनुबन्धों और समझौतों से आपको प्रचुर लाभ मिलेगा। प्रेम एवम् प्रणय संबंधों के लिये भी यह एक श्रेष्ठ समय है। आमदनी में अच्छी खासी वृद्धि होगी। लम्बी यात्राएं सुखद व सफलदायक सिद्ध होंगी।

चन्द्र वृश्चिकराशि में आपके बारहवें भाव में स्थित है:

अभी आप बहुत खर्च न करें। व्यय पर नियंत्रण रखें। स्वास्थ्य के लिहाज से भी यह अच्छा समय नहीं है। व्यर्थ की यात्राओं से बचें। परामनोवैज्ञानिक एवम् गूढ़ अनुभवों को प्राप्त करने के लिये आपका झुकाव रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखें। कठोर भाषा से परेशानी में पड़ सकते हैं। सट्टे बाजी से बचें।

मंगल तुलाराशि में आपके ग्यारहवें भाव में स्थित है:

मित्रों और सहयोगियों से आपको लाभ मिलेगा। बहु प्रतीक्षित इच्छाओं और आकांक्षाओं की पूर्ति होगी और लम्बी यात्राएं सफलदायक रहेंगी। आमदनी में काफी बढ़ोत्तरी होना सुनिश्चित है। विलास सामग्री एवम् अन्य चीजों पर आप व्यय करेंगे। पारिवारिक वातावरण सुखद रहेगा।

क्या आपकी कुंडली में है **राजयोग?**
जानने के लिए

AstroSage AI से करें कंसल्ट

फ्री चैट



॥ गोचर फल (24-10-2025) ॥

बुध वृश्चिकराशि में आपके बारहवें भाव में स्थित है:

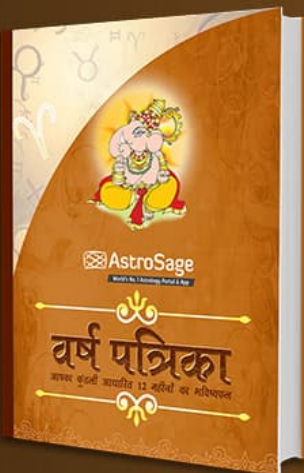
यह अवधि आपको मानसिक चिन्ताएं देगी। विरोधी प्रतिष्ठा पर आंच लाने का प्रयत्न करेंगे। व्यय बढ़ता रहेगा। अचानक हानि होने की भी संभावना है। स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के कारण परेशान रहेंगे। हानिकर कार्यों से भी सम्बंधित रह सकते हैं। पारिवारिक माहौल सौमनस्यपूर्ण नहीं रहेगा। आपका मन अध्यात्म की ओर झुकेगा। समस्याओं परेशानियों का प्रतिरोध करने की कोशिश करें। जोखिम उठाने की प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखें और सब प्रकार की सट्टेबाजी से बचें।

गुरु कर्कराशि में आपके आठवें भाव में स्थित है:

मानसिक चिन्ताओं के कारण तकलीफ होगी। शारीरिक रोग भी घेरे रह सकते हैं। दिमाग को शांति नहीं मिलेगी। परिवार जनों का बर्ताव भी फर्क रहेगा। लेकिन गूढ़ विज्ञान और परामनोविज्ञान में आपकी रुचि जागृत होगी। इन क्षेत्रों के कुछ अनुभव भी प्राप्त होंगे। अचानक धन लाभ होने की भी संभावना है। पूंजी निवेश का प्रयत्न न करें क्योंकि मन चाहा परिणाम प्राप्त नहीं होगा। मित्र व सहयोगी अपना वचन नहीं निभायेंगे। असुरक्षा की भावना सदैव विद्यमान रहेगी।

शुक्र कन्याराशि में आपके दसवें भाव में स्थित है:

अपने कार्य क्षेत्र में आप महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त करेंगे। प्रतिष्ठा और सम्मान में प्रचुर वृद्धि होगी। इस अवधि में विपरीत परिस्थितियों से भी आप कुशलता से निपट सकेंगे। व्यापारी सहयोगियों या व्यवसायिक लोगों ग्राहकों के साथ आपके संबंध दिन व रात सुधरेंगे। समय के साथ साथ आप संग्रहशील होते जायेंगे और विलास सामग्री पर भी व्यय करेंगे। परिवार जनों का बर्ताव बहुत अच्छा रहेगा। व्यापारिक यात्राओं की संभावना है।



आपके अगले 12
महीने की पूरी भविष्यवाणी
सिर्फ एक क्लिक दूर

अभी ऑर्डर करें

॥ गोचर फल (24-10-2025) ॥

शनि मीनराशि में आपके चौथे भाव में स्थित है:

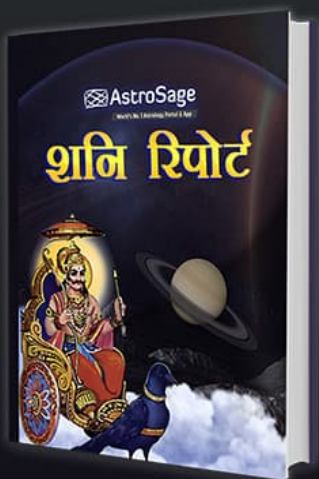
आप पर ऐसी बातों के झुठे इल्जाम लगाए जा सकते हैं जिनमें आपका सहयोग नगण्य रहा हो। पारिवारिक सुख का भी अभाव रहेगा। प्रयासों में असफलता अवसाद पैदा कर देगी। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अगर कोई लंबी बीमारी भोग रहे हैं तो पूरे परहेज से रहें। आपके विरोधी आपकी छवि बिगाड़ने का प्रयास करेंगे। बहसों में न उलझें तो ठीक रहेगा। सांसारिक सुखों के लिहाज से यह समय अच्छा नहीं है फिर भी धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में लगे रहने से कुछ राहत महसूस होगी।

राहु कुंभराशि में आपके तीसरे भाव में स्थित है:

अपनी उद्यम शक्ति और महती ऊर्जा के द्वारा आप किसी भी काम को बहुत अच्छे तरीके से पूरा करने में सक्षम रहेंगे। आपके उद्देश्य की दृढ़ता सराही जायेगी। अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति के कारण विपरीत परिस्थिति में भी आपको मति भ्रम नहीं होगा और सही काम करेंगे। आपका सामाजिक दायरा बढ़ेगा और आपकी प्रतिष्ठा में भी बढ़ोत्तरी होगी। काफी भ्रमण करना पड़ेगा। भाई बहिनों से संबंध अच्छे रहेंगे। संचार माध्यम द्वारा आपको उत्साहवर्धक समाचार मिलेगा। व्यापार और लेन देन के सौदों की बहुत अच्छे रहने की संभावना है। अगर नौकरी में हैं तो शीघ्र पदोन्नति होनी चाहिये।

केतु सिंहराशि में आपके नौवें भाव में स्थित है:

किसी संस्थान के प्रमुख व्यक्ति के आप सम्पर्क में आयेंगे। औरों के प्रति जनकल्याण की भावना से काम करने की प्रवृत्ति होगी। किसी नयी सृजनात्मक उपलब्धि के कारण आपको मान्यता मिल सकती है। वैसे इस अवधि में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी और सम्मान में इजाफा होगा। आप अति सम्मानीय व्यक्ति समझे जायेंगे। यात्रा का बहुत महत्व होगा। आपकी धर्म एवम् अध्यात्म की ओर झुकने की प्रवृत्ति में भावनात्मक गहराई का समावेश होगा। पारिवारिक जीवन हर्षोल्लास से सम्पन्न रहेगा। परिवार में कोई मंगल कृत्य होगा। इस अवधि का पूरा लाभ उठाने का प्रयत्न करें।



शनि को सुधारें

शनि रिपोर्ट पाएं

अभी ऑर्डर करें

॥ लालकिताब फलकथन ॥

सूर्य आपके सातवें भाव में स्थित है:

सातवें भाव में स्थित सूर्य यदि शुभ है और यदि बृहस्पति, मंगल अथवा चंद्रमा दूसरे भाव में है तो जातक सरकार में मंत्री जैसा पद प्राप्त करता है। बुध उच्च का हो या पांचवें भाव में हो अथवा सातवां भाव मंगल से देखा जा रहा हो तो जातक के पास आमदनी का अंतहीन श्रोत होता है। यदि सातवें भाव में स्थित सूर्य हानिकारक हो और बृहस्पति, शुक्र या कोई और अशुभ ग्रह ग्यारहवें भाव में स्थित हो तो तथा बुध किसी भी भाव में नीच का हो तो जातक की मौत किसी मुठभेड़ में परिवार के कई सदस्यों के साथ होती है। जातक को सरकार की ओर से परेशानियां तथा तपेदित और अस्थमा जैसी बीमारियां हो सकती हैं। आगजनी, सांवलापन और अन्य पारिवारिक कष्ट से आई झुंझलाहट जातक को वैरागी बनने या आत्महत्या करने को मजबूर कर सकती है। सातवें भाव हानिकारक सूर्य हो और मंगल या शनि दूसरे या बारहवें भाव में स्थित हों तथा चंद्रमा पहले भाव में हो तो जातक को कुष्ठ या ल्यूकोडर्मा जैसे चर्मरोग हो सकते हैं।

उपाय

- 1) नमक सेवन की मात्रा को कम करें।
- 2) किसी भी काम को शु करने से पहले मीठा खाएं और उसके बाद पानी जर पियें।
- 3) खाना खाने से पहले रोटी का एक टुकड़ा रसोई घर की आग में डालें।
- 4) काली अथवा बिना सींग वाली गाय को पालें और उसकी सेवा करें लेकिन ध्यान रहे गाय सफेद नहीं होनी चाहिए।



एस्ट्रोसेज शॉप

अभी खरीदें >>>

+91 9560670006, 9911840093, 120 4138503

ए-139 सेक्टर 63, नोएडा यूपी

www.AstroSage.com

रत्न



रुद्राक्ष



माला



यंत्र



जड़ी



परामर्श



॥ लालकिताब फलकथन ॥

चन्द्र आपके दसवें भाव में स्थित है:

दसवां घर हर तरीके में शनि द्वारा शासित है। यह घर चौथे घर के द्वारा देखा जाता है, जो चंद्रमा द्वारा शासित होता है। इसलिए इस घर में स्थित चंद्रमा जातक को 90 साल की लंबी आयु सुनिश्चित करता है। चंद्रमा और शनि आपस में शत्रु हैं इसलिए, तरल प में दवाओं का सेवन जातक को हमेशा हानिकारक साबित होंगी। रात में दूध का सेवन जहर के समान कार्य करता है। यदि जातक चिकित्सक है तो उसके द्वारा रोगी को दी जाने वाली दवाएं यदि शुष्क हों तो मरीज पर इलाज का जादुई प्रभाव पड़ेगा। यदि जातक सर्जन है तो वह सर्जरी के माध्यम से वह महान धन और प्रसिद्धि अर्जित करेगा। यदि दूसरा और चौथा भाव खाली हो तो जातक पर पैसों की बरसात होगी। यदि शनि पहले भाव में स्थित हो तो विपरीत लिंगी के कारण जातक का विनाश हो जाता है, विशेषकर विधवा जातक के विनाश का कारण बनती है। शनि से संबंधित वस्तुएं और व्यवसाय जातक के लिए फायदेमंद साबित होगा।

उपाय

- 1) धार्मिक स्थानों की यात्रा भाग्य वृद्धि में सहायक होगी।
- 2) बारिस अथवा नदी का प्राकृतिक जल किसी कंटेनर कनस्टर) में भर कर अपने घर के भीतर 15 साल तक रखें। यह दसम भाव में स्थित चंद्रमा के विषाक्त और बुरे प्रभाव को धो देगा।
- 3) रात में दूध न पिएं।
- 4) दुधा पशु न तो आपके घर में लंबे समय तक रह पाएंगे और न ही वो आपके लिए फायदेमंद और शुभ साबित होंगे।
- 5) शराब, मांस, और व्यभिचार से बचें।

मंगल आपके चौथे भाव में स्थित है:

चौथा घर समग्र चंद्रमा की संपत्ति है। इस घर में मंगल ग्रह की आग और गर्मी चंद्रमा के ठंडे पानी को जला देती है। चंद्रमा के गुण प्रतिकूल प्रभावी हो जाते हैं। जातक अपने मन की शांति खो देता है और दूसरों से ईर्ष्या करने लगता है। वह हमेशा अपने छोटे भाई के साथ बुरा बर्ताव करता है। जातक की बुरी योजना बहुत बड़ी विनाशकारी शक्तियां प्राप्त कर लेती है। इस प्रकार का जातक अपनी माँ, पत्नी, सास आदि के जीवन के लिए बहुत प्रतिकूल प्रभावी होता है। जातक का गुस्सा उसके जीवन के विभिन्न पहलुओं के विनाश का कारण बन जाता है।

उपाय

- 1) किसी बरगद के पेड़ की जड़ों पर मीठा दूध चढ़ाएं और वहां की गीली मिट्टी को अपनी नाभि पर लगाएं।
- 2) आग से तबाही से बचने के लिए, अपने घर, दुकान या कारखाने की छत पर चीनी की खाली बैग बोरे) रखें।
- 3) हमेशा आपने साथ चांदी का एक चौकोर टुकड़ा रखें।
- 4) काले, काने और विकलांग व्यक्ति से दूर रहें।

॥ लालकिताब फलकथन ॥

बुध आपके सातवें भाव में स्थित है:

पुरुष कुंडली में सातवें घर में स्थित बुध जातक के शुभचिंतकों के लिए शुभ परिणाम देता है। स्त्री जातक की कुण्डली में भी यह अच्छा परिणाम देता है। जातक की कलम में तलवार से ज्यादा ताकत होगी। जातक की शाली हर लिहाज से सहयोगी सिद्ध होगी। यदि चन्द्रमा पहले भाव में स्थित हो तो विदेश यात्रा लाभकारी रहेगी। तीसरे भाव में स्थित शनि ससुराल वालों को अमीर बनाता है।

उपाय

- 1) साझेदारी के व्यापार से बचें।
- 2) सट्टेबाजी से बचें।
- 3) खराब चरित्र वाली साली से सम्बन्ध न रखें।

गुरु आपके सातवें भाव में स्थित है:

सातवां घर शुक्र का होता है, अतः यह मिश्रित परिणाम देगा। जातक का भाग्योदय शादी के बाद होगा और जातक धार्मिक कार्यों में शामिल होगा। घर के मामले में मिलने वाला अच्छा परिणाम चंद्रमा की स्थिति पर निर्भर करेगा। जातक देनदार नहीं हो सकता है लेकिन उसके अच्छे बच्चे होंगे। यदि सूर्य पहले भाव में हो तो जातक एक अच्छा ज्योतिषी और आराम पसंद होगा। लेकिन यदि बृहस्पति सातवें भाव में नीच का हो और शनि नौवें भाव में हो तो जातक चोर हो सकता है। यदि बुध नौवें भाव में हो तो जातक के वैवाहिक जीवन परेशानियों से भरा होगा। यदि बृहस्पति नीच का हो तो जातक को भाइयों से सहयोग नहीं मिलेगा साथ ही वह सरकार के समर्थन से भी वंचित रह जाएगा। सातवें घर में बृहस्पति पिता के साथ मतभेद का कारण बनता है। ऐसे में जातक को चाहिए कि वह कभी भी किसी को कपड़े दान न करे, अन्यथा वह बड़ी गरीबी की चपेट में आ जाएगा।

उपाय

- 1) भगवान शिव की पूजा करें।
- 2) घर में किसी भी देवता की मूर्ति न रखें।
- 3) हमेशा अपने साथ किसी पीले कपड़े में बांध कर सोना रखें।
- 4) पीले कपड़े पहने हुए साधु और घड़ीयों से दूर रहें।

॥ लालकिताब फलकथन ॥

शुक्र आपके छठे भाव में स्थित है:

यह घर बुध और केतू का माना गया है जो एक दूसरे के शत्रु हैं। लेकिन शुक्र दोनों का मित्र है। इस घर में शुक्र नीच का होता है। लेकिन यदि जातक विपरीत लिंगी को प्रसन्न रखता है और सारे और सुविधा उपलब्ध करवाता है तो उसके धन और पैसे में वृद्धि होगी। जातक की पत्नी को पुरुषों के जैसे कपड़े नहीं पहनने चाहिए और न ही पुरुषों के जैसे बाल रखने चाहिए अन्यथा गरीबी बढ़ती है। ऐसे जातक को उसी से विवाह करना चाहिए जिसके भाई हों। इसके अलावा, जातक कोई भी पूरा किए बिना काम बीच में नहीं छोड़ता।

उपाय

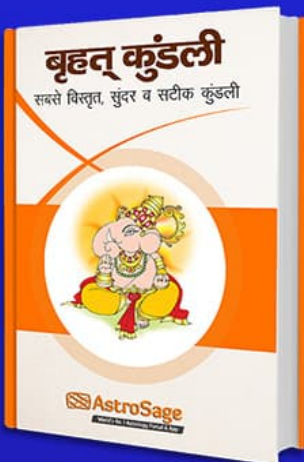
- 1) पत्नी के बालों में सोने की हेयर क्लिप का उपयोग करवाएं।
- 2) खयाल रखें कि पत्नी नंगे पैर न चले।
- 3) निजी अंगों को लाल दवा से धोएं।

शनि आपके पहले भाव में स्थित है:

पहला घर सूर्य और मंगल ग्रह से प्रभावित होता है। पहले घर में शनि तभी अच्छे परिणाम देगा जब तीसरे, सातवें या दसवें घर में शनि के शत्रु ग्रह न हों। यदि, बुध या शुक्र, राहू या केतू, सातवें भाव में हों तो शनि हमेशा अच्छे परिणाम देगा। यदि शनि नीच का हो और जातक के शरीर में बाल अधिक हों तो जातक गरीब होगा। यदि जातक अपना जन्मदिन मनाता है तो बहुत बुरे परिणाम मिलेंगे हालांकि जातक दीर्घायु होगा।

उपाय

- 1) शराब और मांसाहारी भोजन से स्वयं को बचाएं।
- 2) नौकरी और व्यवसाय में लाभ के लिए जमीन में सुरमा दफनायें।
- 3) सुख और समृद्धि के लिए बंदरों की सेवा करें।
- 4) बरगद के पेड़ की जड़ों पर मीठा दूध चढ़ाने से शिक्षा और स्वास्थ्य में सकारात्मक परिणाम मिलेंगे।



सबसे डिटेल्ड कुंडली

बृहत् कुंडली | 250+ पेज | सिर्फ ₹399

अभी ऑर्डर करें

॥ लालकिताब फलकथन ॥

राहू आपके दूसरे भाव में स्थित है:

यदि दूसरे घर में राहू शुभ अवस्था में हो तो जातक पैसा एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करता है और किसी राजा की तरह जीवन जीता है। जातक दीर्घायु होता है। दूसरा भाव बृहस्पति और शुक्र से प्रभावित होता है। यदि बृहस्पति शुभ हो तो जातक अपनी प्रारंभिक अवस्था में धन से युक्त व आराम भरी जिन्दगी जीता है। यदि राहू नीच का हो तो जातक गरीब होता है, उसका पारिवारिक जीवन खराब होता है। वह पेट के विकारों से परेशान होता है। जातक पैसे बचाने में असमर्थ होता है और उसकी मृत्यु किसी हथियार से होती है। उसके जीवन के दसवें, इक्कीसवें और बयालीसवें वर्ष में चोरी आदि माध्यमों से उसका धन खो जाता है।

उपाय

- 1) चांदी की एक ठोस गोली अपनी जेब में रखें।
- 2) बृहस्पति से सम्बंधित चीजें जैसे सोना, पीले कपड़े और केसर आदि उपयोग में लाएं।
- 3) माँ के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध रखें।
- 4) शादी के बाद ससुराल वालों से कोई बिजली का उपकरण न लें।

केतु आपके आठवें भाव में स्थित है:

आठवां घर मंगल ग्रह का है, जो केतु का शत्रु है। यदि आठवें भाव में केतू शुभ है तो जातक को चौंतीस साल की उम्र में अथवा जातक की बहन या पुत्री की शादी के बाद पुत्र की प्राप्ति होती है। यदि बृहस्पति या मंगल छठवें या बारहवें घर में हों तो केतू अशुभ परिणाम नहीं देता। चंद्रमा के दूसरे भाव में स्थित होने पर भी यही परिणाम मिलता है। यदि आठवें भाव में स्थित केतू अशुभ हो तो जातक की पत्नी बीमार रहती है। पुत्र का जन्म नहीं होता, यदि होता है तो मृत्यु हो जाती है। जातक मधुमेह या मूत्र रोग से ग्रस्त होता है। यदि शनि अथवा मंगल सातवें घर में हों तो जातक दुर्भाग्यशाली होता है। आठवें भाव में अशुभ केतू के होने की अवस्था में जातक का चरित्र उसके पत्नी के स्वास्थ्य को निर्धारित करता है। छब्बीस साल की उम्र के बाद वैवाहिक जीवन में परेशानियां आती हैं।

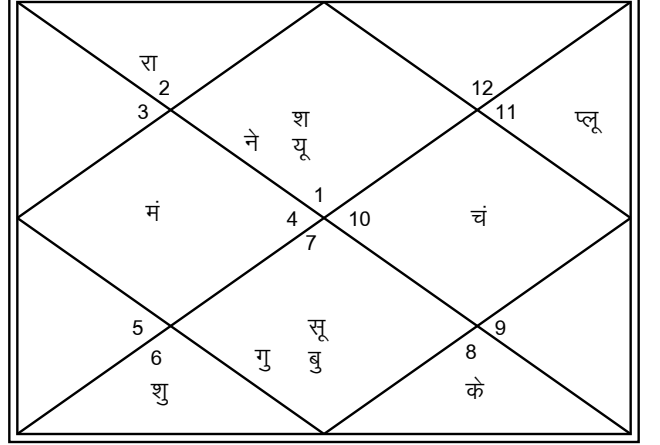
उपाय

- 1) एक कुत्ता पालें।
- 2) किसी मंदिर में काला और सफेद रंग वाला कंबल दान करें।
- 3) भगवान गणेश की पूजा करें।
- 4) कान में सोना पहनें।
- 5) माथे पर केसर का तिलक लगाएं।

॥ लाल किताब गणना ॥

नाम	Sagar	सूर्योदय	06. 01. 20	दशा भोग्य	panz 9 o 11 ek 30 fn
लिंग	Male	रेखांश	74.0.E	तिथि	अष्टमी
दिनांक	29.6.1990	अक्षांश	18.0.N	योग	वरीयान
दिन	शुक्रवार	जन्म स्थान	Maharashtra	लग्न	धनु
समय	19.30.56	अयनांश	023-43-25	राशि	कन्या
साम्पातिक काल	13.26.28	अयनांश नाम	लाहिरी	नक्षत्र	हस्त-1
				दश्यास्त	19. 13. 19
				करण	विष्टि
				लग्न स्वामी	गुरु
				राशि स्वामी	बुध
				नक्षत्र स्वामी	चंद्र

लग्न चक्र



ग्रह	राशि	स्थिति	सोया	किस्मत जगानेवाला	नेक / मंदा
सूर्य	तुला	-----	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
चंद्र	मकर	-----	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
मंगल	कर्क	-----	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
बुध	तुला	-----	नहीं	नहीं	नेक / शुभ
गुरु	तुला	-----	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
शुक्र	कन्या	-----	हाँ	नहीं	मंदा / अशुभ
शनि	मेष	-----	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
राहु	वृषभ	-----	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ
केतु	वृश्चिक	-----	नहीं	नहीं	मंदा / अशुभ

लाल किताब दशा

शनि 6 वर्ष आरम्भ 29/06/1990 अंत 29/06/1996 राहु 29/06/1992 बुध 29/06/1994 शनि 29/06/1996	राहु 6 वर्ष आरम्भ 29/06/1996 अंत 29/06/2002 मंगल 29/06/1998 केतु 29/06/2000 राहु 29/06/2002	केतु 3 वर्ष आरम्भ 29/06/2002 अंत 29/06/2005 शनि 29/06/2003 राहु 29/06/2004 केतु 29/06/2005	गुरु 6 वर्ष आरम्भ 29/06/2005 अंत 29/06/2011 केतु 29/06/2007 गुरु 29/06/2009 सूर्य 29/06/2011	सूर्य 2 वर्ष आरम्भ 29/06/2011 अंत 29/06/2013 सूर्य 29/02/2012 चन्द्र 29/10/2012 मंगल 29/06/2013	चन्द्र 1 वर्ष आरम्भ 29/06/2013 अंत 29/06/2014 गुरु 29/10/2013 सूर्य 28/02/2014 चन्द्र 28/06/2014
शुक्र 3 वर्ष आरम्भ 29/06/2014 अंत 29/06/2017 मंगल 28/06/2015 सूर्य 28/06/2016 चन्द्र 28/06/2017	मंगल 6 वर्ष आरम्भ 29/06/2017 अंत 29/06/2023 मंगल 28/06/2019 शनि 28/06/2021 शुक्र 28/06/2023	बुध 2 वर्ष आरम्भ 29/06/2023 अंत 29/06/2025 चन्द्र 28/02/2024 मंगल 28/10/2024 गुरु 28/06/2025	शनि 6 वर्ष आरम्भ 29/06/2025 अंत 29/06/2031 राहु 28/06/2027 बुध 28/06/2029 शनि 28/06/2031	राहु 6 वर्ष आरम्भ 29/06/2031 अंत 29/06/2037 मंगल 28/06/2033 केतु 28/06/2035 राहु 28/06/2037	केतु 3 वर्ष आरम्भ 29/06/2037 अंत 29/06/2040 शनि 28/06/2038 राहु 28/06/2039 केतु 28/06/2040
गुरु 6 वर्ष आरम्भ 29/06/2040 अंत 29/06/2046 केतु 28/06/2042 गुरु 28/06/2044 सूर्य 28/06/2046	सूर्य 2 वर्ष आरम्भ 29/06/2046 अंत 29/06/2048 सूर्य 28/02/2047 चन्द्र 28/10/2047 मंगल 28/06/2048	चन्द्र 1 वर्ष आरम्भ 29/06/2048 अंत 29/06/2049 गुरु 28/10/2048 सूर्य 28/02/2049 चन्द्र 28/06/2049	शुक्र 3 वर्ष आरम्भ 29/06/2049 अंत 29/06/2052 मंगल 28/06/2050 सूर्य 28/06/2051 चन्द्र 28/06/2052	मंगल 6 वर्ष आरम्भ 29/06/2052 अंत 29/06/2058 मंगल 28/06/2054 शनि 28/06/2056 शुक्र 28/06/2058	बुध 2 वर्ष आरम्भ 29/06/2058 अंत 29/06/2060 चन्द्र 28/02/2059 मंगल 28/10/2059 गुरु 28/06/2060
शनि 6 वर्ष आरम्भ 29/06/2060 अंत 29/06/2066 राहु 28/06/2062 बुध 28/06/2064 शनि 28/06/2066	राहु 6 वर्ष आरम्भ 29/06/2066 अंत 29/06/2072 मंगल 28/06/2068 केतु 28/06/2070 राहु 28/06/2072	केतु 3 वर्ष आरम्भ 29/06/2072 अंत 29/06/2075 शनि 28/06/2073 राहु 28/06/2074 केतु 28/06/2075	गुरु 6 वर्ष आरम्भ 29/06/2075 अंत 29/06/2081 केतु 28/06/2077 गुरु 28/06/2079 सूर्य 28/06/2081	सूर्य 2 वर्ष आरम्भ 29/06/2081 अंत 29/06/2083 सूर्य 28/02/2082 चन्द्र 28/10/2082 मंगल 28/06/2083	चन्द्र 1 वर्ष आरम्भ 29/06/2083 अंत 29/06/2084 गुरु 28/10/2083 सूर्य 28/02/2084 चन्द्र 28/06/2084
शुक्र 3 वर्ष आरम्भ 29/06/2084 अंत 29/06/2087 मंगल 28/06/2085 सूर्य 28/06/2086 चन्द्र 28/06/2087	मंगल 6 वर्ष आरम्भ 29/06/2087 अंत 29/06/2093 मंगल 28/06/2089 शनि 28/06/2091 शुक्र 28/06/2093	बुध 2 वर्ष आरम्भ 29/06/2093 अंत 29/06/2095 चन्द्र 28/02/2094 मंगल 28/10/2094 गुरु 28/06/2095			

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

सूर्य विचार

आपकी कुण्डली में सूर्य मिथुन राशि में स्थित है, जो कि सूर्य की सम राशि है। सूर्य नौवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में सातवें घर में स्थित है। सूर्यदृष्टि पहले घरावर आहे मंगल, शनि की पूर्ण दृष्टि सूर्य पर है।

इस भाव में सूर्य की उपस्थिति शुभ नहीं मानी गई है। इस भाव में उपस्थित सूर्य आपको इतना अधिक स्वाभिमानी बना सकता है कि लोग आपको घमंडी समझ सकते हैं। ऐसे में स्वाभाव में कठोरता आना भी सम्भव है। कार्यक्षेत्र में लाभ और काम करने में अधिक आनंद तभी आएगा जब आपका कार्यालय आपके निवास स्थान से समीप ही हो।

सूर्य की इस भाव में स्थिति वैवाहिक जीवन के लिए भी ठीक नहीं मानी गई है। अतः जीवन साथी से मतभेद सम्भव है। विशेषकर विवाह के पंद्रह वर्षों तक वैवाहिक जीवन में सामंजस्य की कमी रहती है। फिर भी जीवन साथी का स्वभाव शमीला हो सकता है। उसके अंग कोमल और नाजुक हो सकते हैं। यहां स्थित सूर्य आपको आत्मरत भी बना सकता है और लोग आपको स्वार्थी समझ सकते हैं।

सूर्य की यह स्थिति किसी विशेष बात को लेकर आपको चिंचित रख सकती है। पिता की बहन अर्थात् बुआ के साथ आपके सम्बंध खराब रह सकते हैं। कभीकभी आर्थिक स्थिति और पारिवारिक संबंधों को लेकर भी परेशानी उठानी पड़ सकती है। सत्ता पक्ष, सरकार या सरकारी कर्मचारियों के द्वारा अपमानित होना पड़ सकता है या इनके कारण हानि हो सकती है।

चन्द्र विचार

आपकी कुण्डली में चन्द्र कन्या राशि में स्थित है, जो कि चन्द्र की मित्र राशि है। चन्द्र आठवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में दसवें घर में स्थित है। चन्द्रदृष्टि चौथे घरावर आहे मंगल, शनि, राहू की पूर्ण दृष्टि चन्द्र पर है।

आप समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति होंगे। आप सफलता तो प्राप्त करेंगे ही साथ ही लोगों के बीच आपकी लोकप्रियता भी अच्छी खासी होगी। आप कार्यकुशल व्यक्ति हैं अतः आप निश्चय ही आप जीवन में बड़ी सफलता प्राप्त करेंगे। आप दयालु और निर्मल स्वाभाव के बुद्धिमान व्यक्ति हैं। आप लोगों का हित करते हुए बहुत बड़े यश के भागीदार बनेंगे। आप स्वभाव से संतोषी व्यक्ति हैं।

व्यापार और व्यवसाय के मामलों में भी आपकी कार्यकुशलता उत्तम होगी। माता के साथ आपके संबंध अच्छे रहेंगे। यही नहीं लगभग अधिकांश स्त्रियों के साथ आपके सम्बन्ध अच्छे रहेंगे। लेकिन आप अपने बच्चों को लेकर बहुत प्रसन्न नहीं रहेंगे। यह भी हो सकता है कि आपको अपने व्यवसाय में कई बार परिवर्तन करना पड़े। आपको विदेश यात्राएं करने का मौका मिलेगा।

अगर आप महत्वाकांक्षी हुए और अपने कार्य का दायरा बड़ा करने का प्रयास किया तो आप कोई बड़ा पद प्राप्त कर सकते हैं। हो सकता है कि वह पद सरकार की तरफ से भी हो। आपकी उम्र का २४वां और ४३वां साल आपके लिए बहुत भाग्यशाली सिद्ध होंगे। चन्द्रमा की यह स्थिति लम्बी उम्र देने में सहायक मानी गई है।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

मंगल विचार

आपकी कुण्डली में मंगल मीन राशि में स्थित है, जो कि मंगल की मित्र राशि है। मंगल पांचवें, बारहवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में चौथे घर में स्थित है। मंगलदृष्टि सातवें, दसवें, ग्यारहवें घरावर आहे चन्द्र,केतु की पूर्ण दृष्टि मंगल पर है।

चौथे भाव का मंगल आपको वाहन सुख और संतान का सुख तो देगा लेकिन यही मंगल मात सुख में कमी करेगा। आप अपनी जन्मभूमि या घर से दूर रह सकते हैं। आप विभिन्न माध्यमों से लाभ कमाते रहेंगे लेकिन आग से होंगे वाले खतरों का भय आपको हमेशा रहेगा। आपका अपने कार्यक्षेत्र में बड़ी तरक्की करेंगे। साथ ही आप बहुत बढिया घर में निवास करेंगे।

आपकी पैतृक सम्पत्ति खोने का भय भी मंगल की यह स्थिति निर्मित करती है। आप जमीनी विवादों में फस सकते हैं। आपके दिमाग में कुछ उथल पुथल हो सकती है अथवा आप किसी कारण से हिंसक हो सकते हैं। आपको अपने वैवाहिक जीवन को लेकर भी कुछ चिंताएँ रह सकती हैं। बड़े भाई या बहन लो लेकर आप कोई मूर्खतापूर्ण निर्णय भी ले सकते हैं।

आपके पिताजी को पारिवारिक जीवन में कुछ परेशानियाँ उठानी पड सकती है। यहां तक कि उन्हें अपने परिवार से अलग भी रहना पड सकता है साथ ही उन्हें आर्थिक हानि भी उठानी पड सकती है। शिक्षा प्राप्ति में भी आपको कुछ व्यवधानों का सामना करना पडेगा। आपको आपकी आशा के अनुप पारिवारिक मदद भी नहीं मिल पाएगी। आपके प्रतिद्वंदी बडे ही प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे।

बुध विचार

आपकी कुण्डली में बुध मिथुन राशि में स्थित है, जो कि बुध की स्व राशि है। बुध सातवें, दसवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में सातवें घर में स्थित है। बुधदृष्टि पहले घरावर आहे मंगल,शनि की पूर्ण दृष्टि बुध पर है।

बुध की यहां स्थिति अधिकांश मामलों में आपको शुभफल ही देगी। यहां स्थित बुध के कारण आप धनवान तो होंगे ही साथ ही आप पवान भी होंगे। आपका जीवन साथी भी स्वपवान होना चाहिए। साथ ही आपके जीवन साथी के पास धन दौलत भी खूब होगी। आपका विवाह कुलीन परिवार में होना चाहिए। लेकिन जीवन साथी का स्वभाव थोडा सा झगडालू हो सकता है।

आप आपके मित्रों में स्त्रियां अधिक संख्या में होंगी। आप देखने में सुन्दर, कुलीन और शिष्ट व्यक्ति हैं। आप स्वभाव से उदार और धार्मिक भी हैं। आप दीर्घायु, मधुरभाषी और सुशील व्यक्ति हैं। आप शिल्पकला में चतुर और विनोदी होने के साथसाथ काम कला में भी निपुण होंगे। आप विद्वान, लेखक या सम्पादक हो सकते हैं।

आप एक कुशल व्यवसायी भी हो सकते हैं। आप किसी भी खरीदने और बेचने के काम से लाभ कमा सकते हैं। लेकिन आपको अपने व्यवसायिक पार्टनर पर विश्वास नहीं रहेगा। आपको लडाई या वादविवाद से बचना होगा अन्यथा उसमें पराजय ही आपके हाथ लगेगी। आपको भक्षाभक्ष में भेद करते हुए सात्विक चीजों का ही सेवन करना चाहिए।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

गुरु विचार

आपकी कुण्डली में गुरु मिथुन राशि में स्थित है, जो कि गुरु की शत्रु राशि है। गुरु पहले, चौथे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में सातवें घर में स्थित है। गुरुदृष्टि ग्यारहवें, पहले, तीसरे घरावर आहे मंगल, शनि की पूर्ण दृष्टि गुरु पर है।

आप शारीरिक प से सुंदर और और आकर्षक व्यक्तित्व के मालिक हैं। लोग आपसे मिलकर प्रसन्न होते हैं अर्थात् आपके आकर्षण के कारण लोग आपसे मिलकर आपके वशीभूत हो जाते हैं। आपकी वाणी आकर्षक और प्रभावशाली होगी। आप कुशाग्र बुद्धि और विद्या सम्पन्न व्यक्ति हैं। आप ज्योतिष काव्य साहित्य, कला प्रेमी और शशास्त्र परिशीलन में आसक्त रहने वाले व्यक्ति हैं।

आप प्रतापी यशस्वी और प्रसिद्ध होंगे। लेकिन यहां स्थित बृहस्पति कभीकभी विपरीत लिंगी के प्रति अधिक आशक्ति देता है परंतु उनके प्रति लम्बे समय तक समर्पित रहना आपको पसंद नहीं होगा। फिर भी आपका जीवन साथी कुलीन और धनवान होना चाहिए। विवाह के कारण आपका भाग्योदय होगा और आपको धन, सुख, श्रेष्ठ पद और मान्यता मिलेगी। आपका जीवन साथी गुणों से युक्त होगा।

सप्तम भाव का बृहस्पति कामुकता अधिक देता है। यहां स्थित कभीकभी अभिमानी भी बनाता है। अतः इन पर नियंत्रण भी आवश्यक होगा। आप शीघ्र ही बड़ी उन्नति और बड़ा पद प्राप्त करेंगे। आपको सरकारी कामों, कचहरी के काम, मंत्रणा देने का काम, सलाहकार का काम, चित्रकला आदि के द्वारा लाभ मिल सकता है। आप न्याय के काम से भी धनार्जन कर सकते हैं।

शुक्र विचार

आपकी कुण्डली में शुक्र वृषभ राशि में स्थित है, जो कि शुक्र की स्व राशि है। शुक्र छठे, ग्यारहवें घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में छठे घर में स्थित है। शुक्रदृष्टि बारहवें घरावर आहे राहु की पूर्ण दृष्टि शुक्र पर है।

इस भाव में स्थित शुक्र के कुछ अच्छे फल कहे गए हैं लेकिन कई अशुभ फल बताए गए हैं। शुक्र की इस भाव में स्थिति आपके कुल की श्रेष्ठता का द्योतक हो सकती है। आप सुशिक्षित और विवेकवान हो सकते हैं। लेकिन यहां स्थित शुक्र आपको डरपोक बना सकता है अथवा आपको स्त्रियों से अप्रियता भी मिल सकती है। गुरुजनों से भी आपका विरोध रह सकता है।

आपको शत्रुओं से पीडा भी मिल सकती है। हालांकि आप शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर पाएंगे। आपको भाईबहनों और मामा से सुख मिलेगा। आपके मामा के कन्या संतान अधिक हो सकती हैं। आपके अच्छे मित्रों की संख्या कम होगी जबकि खराब आदतों वाले मित्र अधिक संख्या में होंगे। आपकी प्रथम संतान पुत्र के प में हो सकती है। आपकी संतान अच्छी होगी और आप पुत्रपौत्रों से युक्त होंगे।

स्त्री पक्ष से आपको कम सुख मिलेगा अथवा कुछ गुप्त परेशानियां रह सकती हैं। हालांकि विवाह के बाद यदि आपका आहार विहार नियमित और मर्यादित रहेगा तो समस्याएं नहीं होंगी। आपके खर्चे आमदनी से अधिक हो सकते हैं। हो सकता है कि आप उचित स्थान पर खर्च न करके अनुचित जगह पर खर्च करें। हो सकता है कि स्वतंत्र व्यवसाय से भी आपको बहुत लाभ न मिल पाए।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

शनि विचार

आपकी कुण्डली में शनि धनु राशि में स्थित है, जो कि शनि की सम राशि है। शनि दूसरे, तीसरे घर का स्वामी होकर आपकी कुण्डली में पहले घर में स्थित है। शनिदृष्टि तीसरे, सातवें, दसवें घरावर आहे सूर्य, बुध, गुरु की पूर्ण दृष्टि शनि पर है।

आपके प्रथम भाव में शनि ग्रह स्थित है अतः आपको इसके मिले जुले फलों की प्राप्ति होगी। पुराने ज्योतिषीय ग्रंथकारों के अनुसार शनि की यह स्थिति एकान्तप्रियता देती है। आप अपने आपको प्रपंचों से दूर रखना चाहेंगे। यदि आप किसी से पहली बार मिलते हैं या कोई आपसे पहली बार मिलता है तो सामने वाले पर आपके व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव पड़ता है।

आप हठी, निश्चयी या कुछ हद तक उदासीन भी हो सकते हैं। आप दीर्घायु और गुणवान होंगे साथ ही आपको राजाओं जैसे अधिकार प्राप्त हो सकते हैं। आपको सरकार या राज पक्ष से लाभ मिलेगा। यदि आप मेहनत करने से नहीं घबराएंगे तो आप धनवान और सुखी होंगे। आपके विरोधी कितने भी बलिष्ठ क्यों न हों आप उन पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

आप गांव या शहर के मुखिया हो सकते हैं। लेकिन प्रारम्भिक आयु में आपको कुछ हद तक संघर्ष करना पड़ सकता है। लेकिन भारी उद्योग, आत्मविश्वास और धर्म के कारण आप अन्ततः सफलता प्राप्त करेंगे। यहां स्थित शनि के दुष्प्रभावों से बचने के लिए आप स्वयं को स्वच्छ रखें, आलस्य से बचें तथा व्यर्थ में विवाद न करें। आप को वात रोग होने का भय रहेगा अतः उससे बचाव के बारे में चिंतन व कार्य करें।

राहु विचार

आपकी कुण्डली में राहु मकर राशि में स्थित है। राहु दूसरे घर में स्थित है। राहुदृष्टि छठे, आठवें, दसवें घरावर आहे केतु की पूर्ण दृष्टि राहु पर है।

इस भाव में स्थित राहु आपको शुभ और अशुभ दोनों तरह के फल देगा। आपके ठोड़ी पर कोई निशान हो सकता है। आप की नाक अपेक्षाकृत बड़ी होनी चाहिए। लोग आप पर विश्वास करेंगे भले ही आप उनके विश्वास पर खरे न उतर पाएं हांलाकि कि आप बहुत हद तक व्यवहार कुशल होंगे। यह स्थिति आपको धनवान बनाने की संकेतक है। राजा या सरकार के माध्यम से आपको धन की प्राप्ति होगी।

आप सुखी रहेंगे। आप अपने जीवनकाल में गौरव और आदर प्राप्त करेंगे। आपको विदेश से भी धन मिलेगा। कहा गया कि यहां का राहु विदेश में धनार्जन करने में सहायता करता है। आप अपने शत्रुओं का विनाश करने में समर्थ होंगे। आपको देशविदेश में घूमने का खूब शौक होगा। लेकिन आपके कामों अक्सर रुकावटें आ सकती हैं।

संतान कम संख्या में होती है। यहां स्थित राहु आपके कामों में स्थिरता लाने में व्यवधान उत्पन्न करता है। आप झूठ बोलने में अधिक विश्वास कर सकते हैं। व्यर्थ बोलने की आदत हो सकती है। वाणी में किसी प्रकार का दोष हो सकता है। किसी अखाद्य व अपेय का सेवन कर सकते हैं। पैतृक सम्पदा का विनाश कर सकते हैं। पैसों का दुरुपयोग कर सकते हैं। कुपात्रों पर धन खर्च कर सकते हैं।

॥ आपकी कुण्डली और ज्योतिष में ग्रह विचार ॥

केतु विचार

आपकी कुण्डली में केतु कर्क राशि में स्थित है। केतु आठवें घर में स्थित है। केतुदृष्टि बारहवें, दूसरे, चौथे घरावर आहे राहू की पूर्ण दृष्टि केतु पर है।

यहां स्थित केतू के कुछ शुभ फल कहे गए हैं। अत आप पराक्रमी और सदैव उद्यम करने वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप अपने कामों के प्रति गंभीर रहते हैं। खेलकूद में भी आपकी गहरी रुचि होगी। आप सुखी रहेंगे। आप शीलवान व्यक्ति हैं। आपको खूब धनलाभ होगा। कई मामलों में आपको सरकार से भी धन की प्राप्ति हो सकती है।

अधिकांश मामलों में यहां स्थित केतू को अशुभफल देने वाला माना गया है। अत आपको दुष्टजनों की संगति अधिक प्रिय होगी। आप लोभी और चालाक हो सकते हैं। किसी व्यक्ति को कष्ट पहुंचाने में आपको कोई हिचक नहीं होगी। आप जाने अंजाने कुछ ऐसे काम कर सकते हैं जो पाप संज्ञक हो सकते हैं। कभीकभी आपके द्वारा किए कार्यों से विवेकहीनता परिलक्षित हो सकती है।

यहां स्थित केतू आपको गुहारोग, मुखरोग या दंत रोग देता है। यह स्थिति आर्थिक मामलों के लिए अच्छी नहीं होती। दूसरों को दिए हुए अपने द्रव्य को मिलने में रुकावट होती है। धन आगमन में व्यवधान आता है। दूसरों के धन और जन के प्रति आशक्ति हो सकती है। वाहन आदि के माध्यम से कष्ट मिल सकता है। मित्रों से विवाद या अलगाव भी हो सकता है।

॥ शोडषवर्ग तालिका ॥

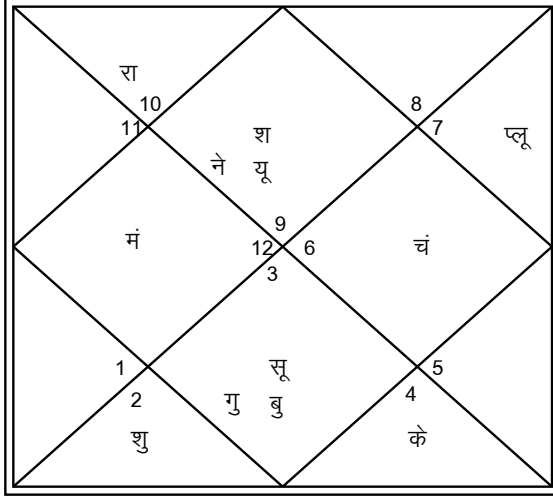
क्र.सं.	शोडषवर्ग	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरे	नेप	प्लू
1	लग्न	9	3	6	12	3	3	2	9	10	4	9	9	7
2	होरा	4	5	4	5	5	4	4	4	5	5	5	4	4
3	द्रेष्काण	1	7	10	8	7	11	6	5	2	8	1	1	3
4	चतुर्थांश	3	6	9	9	6	12	5	6	4	10	12	3	1
5	सप्तमांश	1	6	2	0	5	8	10	3	7	1	0	1	11
6	नवमांश	6	11	1	12	10	2	1	9	2	8	5	6	1
7	दशमांश	3	7	5	5	6	11	1	6	11	5	1	3	2
8	द्वादशांश	4	8	10	10	7	1	6	8	4	10	2	4	3
9	षोडशांश	7	4	2	11	2	10	11	12	9	9	4	7	12
10	विंशांश	5	2	11	11	11	9	4	12	11	11	2	6	3
11	चतुर्विंशांश	8	4	12	1	1	1	1	4	4	4	4	8	10
12	सप्तविंशांश	6	7	1	10	4	5	2	3	5	11	1	6	2
13	त्रिंशांश	3	9	6	8	9	7	6	7	12	12	9	3	3
14	खवेदांश	2	7	8	7	2	10	10	4	3	3	7	3	5
15	अक्षवेदांश	1	5	12	1	12	10	10	5	11	11	5	2	9
16	षष्ट्यंश	10	6	2	6	11	5	1	7	4	10	12	12	1

शोडषवर्ग भाव तालिका

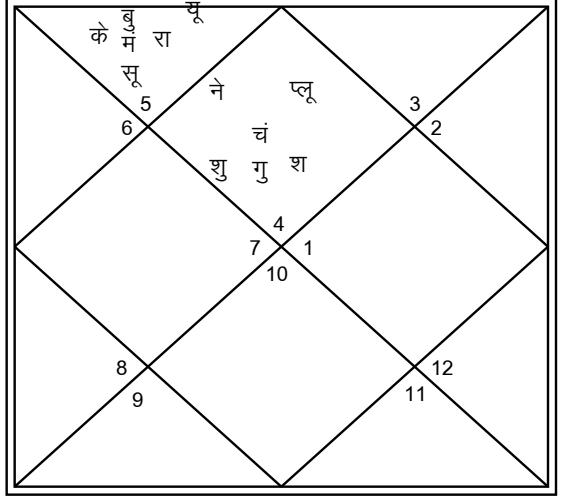
क्र.सं.	शोडषवर्ग	लग्न	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	यूरे	नेप	प्लू
1	लग्न	1	7	10	4	7	7	6	1	2	8	1	1	11
2	होरा	1	2	1	2	2	1	1	1	2	2	2	1	1
3	द्रेष्काण	1	7	10	8	7	11	6	5	2	8	1	1	3
4	चतुर्थांश	1	4	7	7	4	10	3	4	2	8	10	1	11
5	सप्तमांश	1	6	2	12	5	8	10	3	7	1	12	1	11
6	नवमांश	1	6	8	7	5	9	8	4	9	3	12	1	8
7	दशमांश	1	5	3	3	4	9	11	4	9	3	11	1	12
8	द्वादशांश	1	5	7	7	4	10	3	5	1	7	11	1	12
9	षोडशांश	1	10	8	5	8	4	5	6	3	3	10	1	6
10	विंशांश	1	10	7	7	7	5	12	8	7	7	10	2	11
11	चतुर्विंशांश	1	9	5	6	6	6	6	9	9	9	9	1	3
12	सप्तविंशांश	1	2	8	5	11	12	9	10	12	6	8	1	9
13	त्रिंशांश	1	7	4	6	7	5	4	5	10	10	7	1	1
14	खवेदांश	1	6	7	6	1	9	9	3	2	2	6	2	4
15	अक्षवेदांश	1	5	12	1	12	10	10	5	11	11	5	2	9
16	षष्ट्यंश	1	9	5	9	2	8	4	10	7	1	3	3	4

॥ शोडशवर्ग कुण्डलियाँ ॥

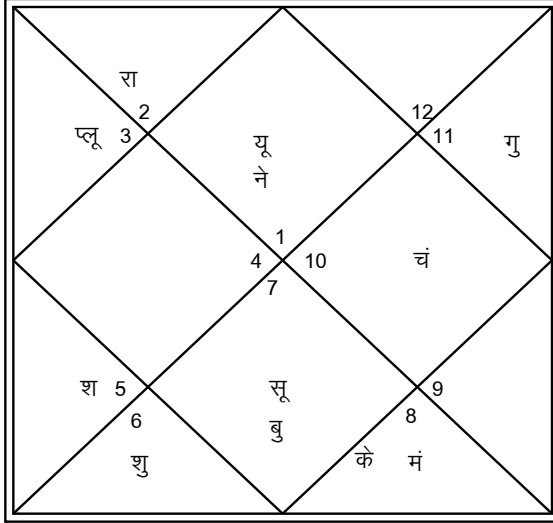
लग्न चक्र



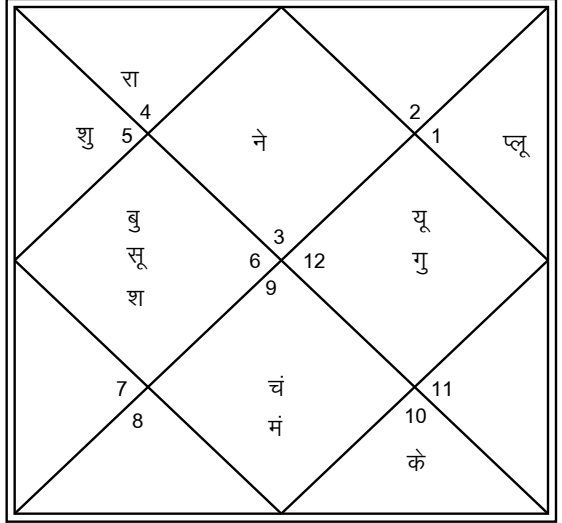
होरा-धन-सम्पत्ति



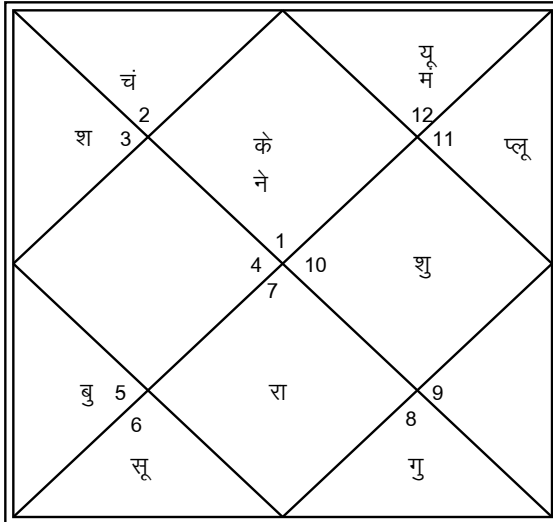
द्रेष्काण-भाई-बहन



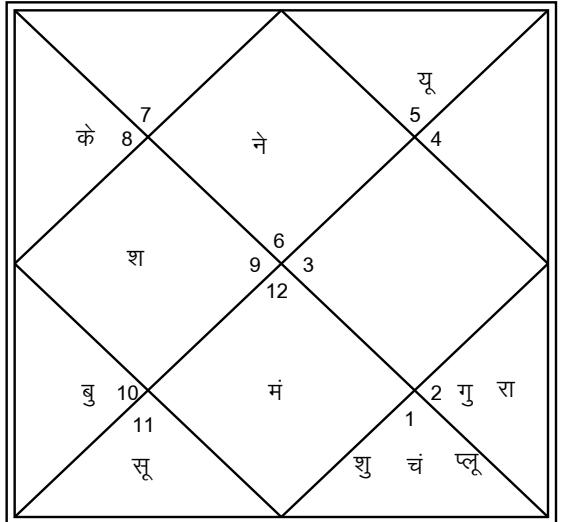
चतुर्थाश-भाग्य



सप्तमांश-बच्चे

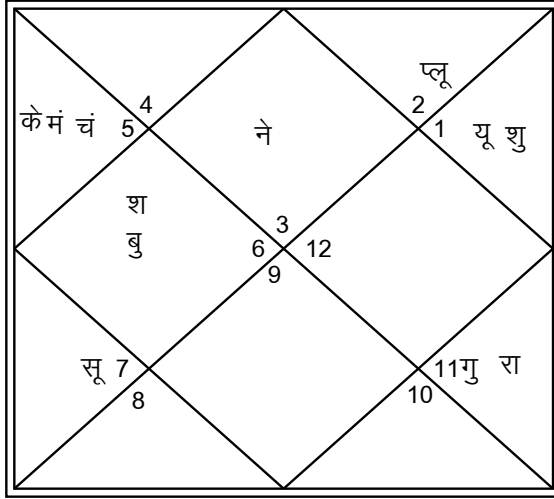


नवमांश-पति-पत्नी

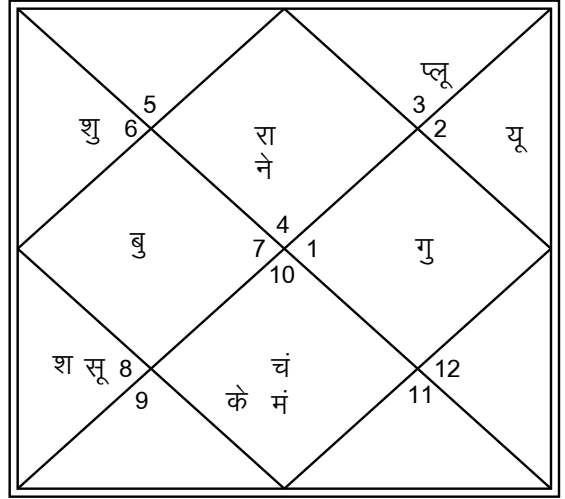


॥ शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ॥

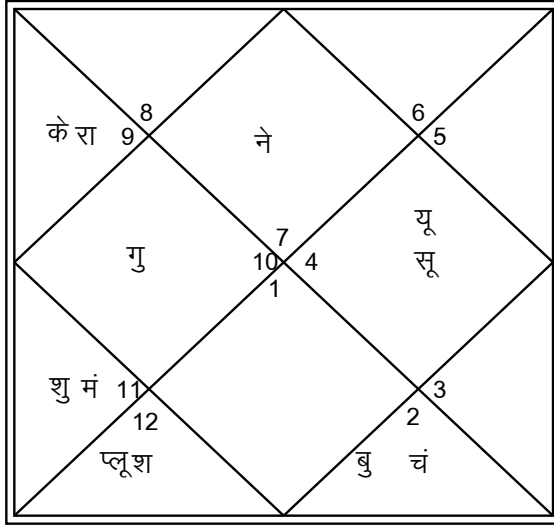
दशमांश-व्यवसाय



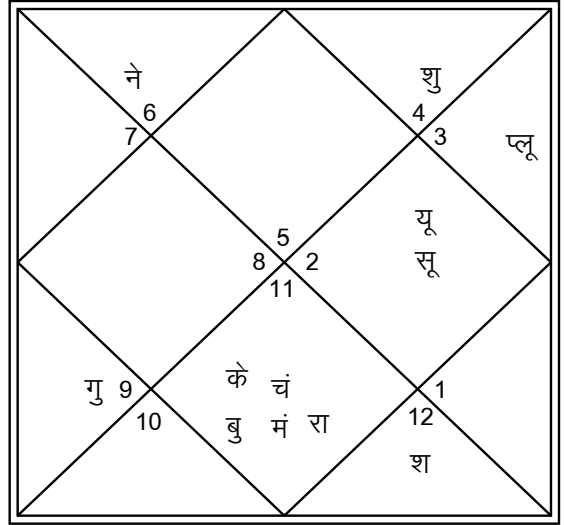
द्वादशांश-माता-पिता



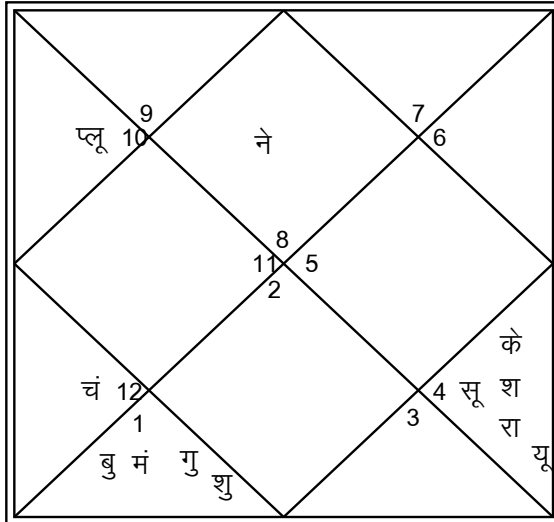
षोडशांश-वाहन



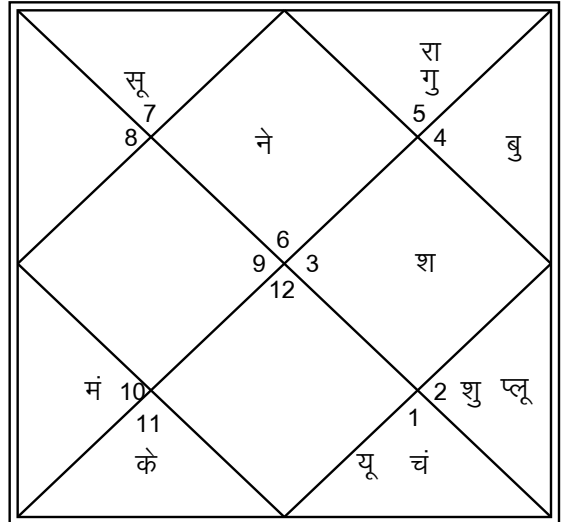
विंशांश-धार्मिक रुचि



सप्तविंशांश-बल

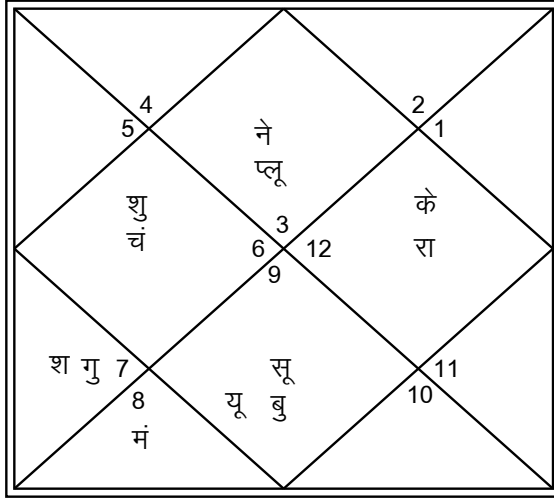


चतुर्विंशांश-शिक्षा

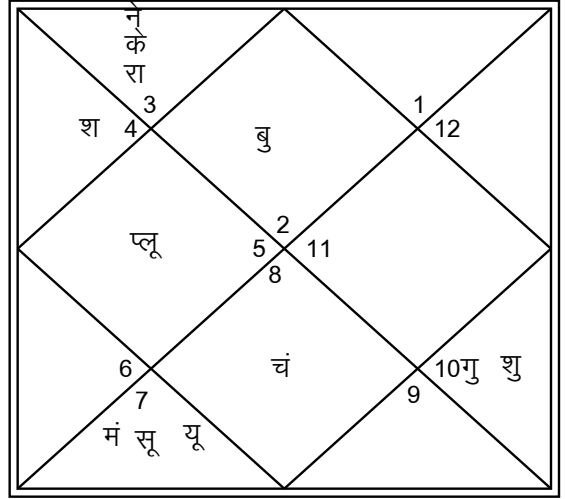


॥ शोडषवर्ग कुण्डलियाँ ॥

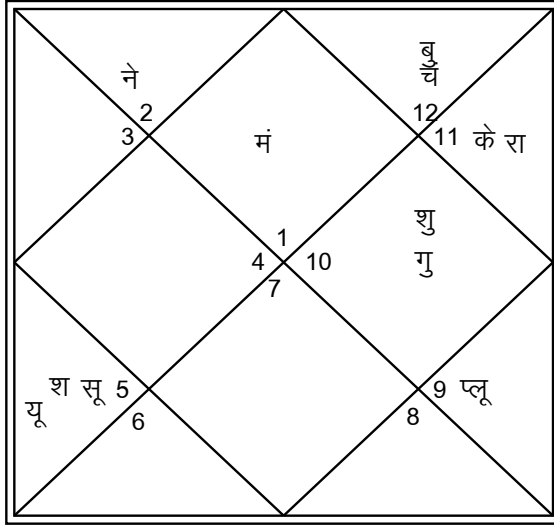
त्रिंशंश-दुर्भाग्य



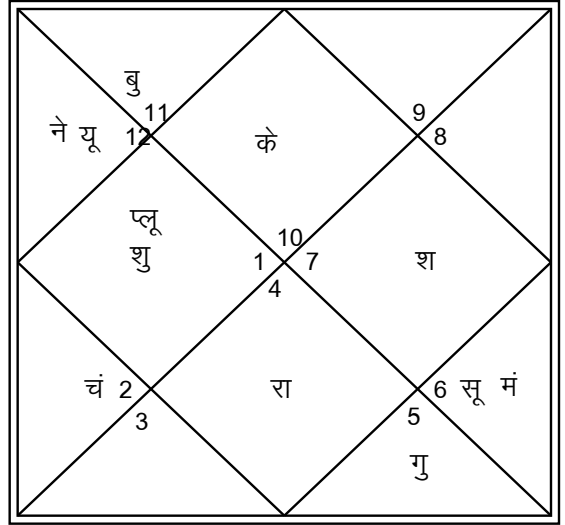
खवेदांश-शुभ फल



अक्षवेदांश-सामान्य जीवन



षष्ट्यंश-सामान्य जीवन



 **एस्ट्रोसेज
शॉप**

अभी खरीदें >>>

+91 9560670006, 9911840093, 120 4138503

ए-139 सेक्टर 63, नोएडा यूपी

www.AstroSage.com

रत्न



रुद्राक्ष



माला



यंत्र



जड़ी

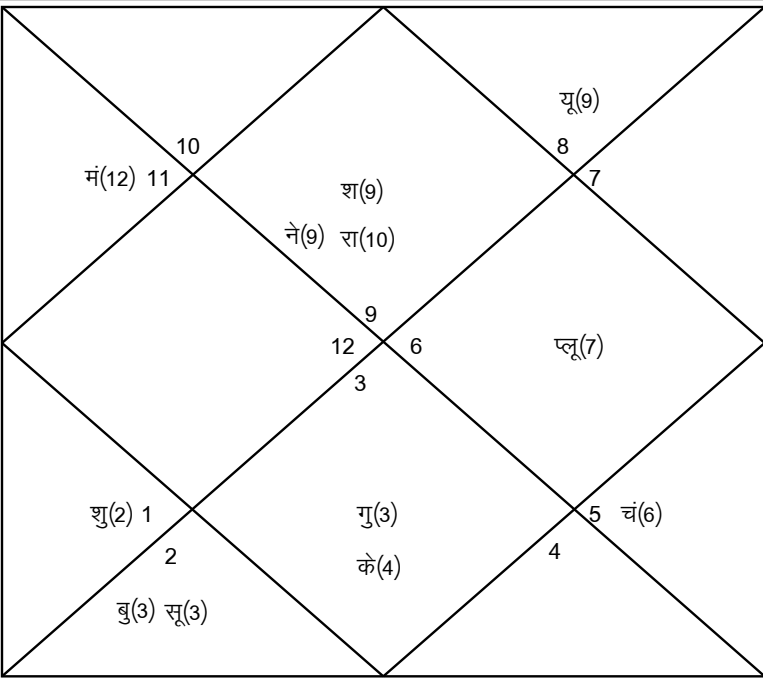


परामर्श



॥ केपी पद्धति ॥

नाम	Sagar	सूर्योदय	06. 01. 20	दशा भोग्य	panz 9 o 11 ek 4 fn
लिंग	Male	रेखांश	74.0.E	तिथि	अष्टमी
दिनांक	29.6.1990	अक्षांश	18.0.N	योग	वरीयान
दिन	शुक्रवार	जन्म स्थान	Maharashtra	लग्न	धनु
समय	19.30.56	अयनांश	023-38-02	राशि	कन्या
साम्पातिक काल	13.26.28	अयनांश नाम	के.पी. नया	नक्षत्र	हस्त-1
					दशा भोग्य
					सूर्यास्त
					करण
					विष्टि
					लग्न स्वामी
					गुरु
					राशि स्वामी
					बुध
					नक्षत्र स्वामी
					चंद्र



चंद्र -10 वर्ष 29/ 6/90 से 4/ 6/00	
चंद्र	4/4/91
मंगल	4/11/91
राहु	4/5/93
गुरु	4/9/94
शनि	4/4/96
बुध	4/9/97
केतु	4/4/98
शुक्र	4/12/99
सूर्य	4/6/00

मंगल -7 वर्ष 4/ 6/00 से 4/ 6/07	
मंगल	1/11/00
राहु	19/11/01
गुरु	25/10/02
शनि	4/12/03
बुध	1/12/04
केतु	28/4/05
शुक्र	28/6/06
सूर्य	4/11/06
चंद्र	4/6/07

राहु -18 वर्ष 4/ 6/07 से 4/ 6/25	
राहु	16/2/10
गुरु	10/7/12
शनि	16/5/15
बुध	4/12/17
केतु	22/12/18
शुक्र	22/12/21
सूर्य	16/11/22
चंद्र	16/5/24
मंगल	4/6/25

गुरु -16 वर्ष 4/ 6/25 से 4/ 6/41	
गुरु	22/7/27
शनि	4/2/30
बुध	10/5/32
केतु	16/4/33
शुक्र	16/12/35
सूर्य	4/10/36
चंद्र	4/2/38
मंगल	10/1/39
राहु	4/6/41

शनि -19 वर्ष 4/ 6/41 से 4/ 6/60	
शनि	7/6/44
बुध	16/2/47
केतु	25/3/48
शुक्र	25/5/51
सूर्य	7/5/52
चंद्र	7/12/53
मंगल	16/1/55
राहु	22/11/57
गुरु	4/6/60

बुध -17 वर्ष 4/ 6/60 से 4/ 6/77	
बुध	1/11/62
केतु	28/10/63
शुक्र	28/8/66
सूर्य	4/7/67
चंद्र	4/12/68
मंगल	1/12/69
राहु	19/6/72
गुरु	25/9/74
शनि	4/6/77

केतु -7 वर्ष 4/ 6/77 से 4/ 6/84	
केतु	1/11/77
शुक्र	1/1/79
सूर्य	7/5/79
चंद्र	7/12/79
मंगल	4/5/80
राहु	22/5/81
गुरु	28/4/82
शनि	7/6/83
बुध	4/6/84

शुक्र -20 वर्ष 4/ 6/84 से 4/ 6/04	
शुक्र	4/10/87
सूर्य	4/10/88
चंद्र	4/6/90
मंगल	4/8/91
राहु	4/8/94
गुरु	4/4/97
शनि	4/6/00
बुध	4/4/03
केतु	4/6/04

सूर्य -6 वर्ष 4/ 6/04 से 4/ 6/10	
सूर्य	22/9/04
चंद्र	22/3/05
मंगल	28/7/05
राहु	22/6/06
गुरु	10/4/07
शनि	22/3/08
बुध	28/1/09
केतु	4/6/09
शुक्र	4/6/10

शासक ग्रह			
ग्रह	राशि स्वामी	नक्षत्र	सब स्वामी
लग्न	गुरु	शुक्र	राहु
चन्द्र	बुध	चंद्र	चंद्र
दिन स्वामी		शुक्र	

भाव स्थिति					
भाव	डिग्री	राशि	नक्षत्र	सब स्वामी	सब स्वामी
1	259.01.17	गुरु	शुक्र	राहु	बुध
2	291.54.43	शनि	चंद्र	शुक्र	शनि
3	326.47.36	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र
4	359.43.35	गुरु	बुध	शनि	गुरु
5	028.20.44	मंगल	सूर्य	चंद्र	शुक्र
6	053.49.27	शुक्र	मंगल	मंगल	बुध
7	079.01.17	बुध	राहु	चंद्र	शुक्र
8	111.54.43	चंद्र	बुध	सूर्य	शनि
9	146.47.36	सूर्य	सूर्य	सूर्य	मंगल
10	179.43.35	बुध	मंगल	शनि	गुरु
11	208.20.44	शुक्र	गुरु	शुक्र	बुध
12	233.49.27	मंगल	बुध	मंगल	बुध

ग्रह स्थिति					
ग्रह	डिग्री	राशि	नक्षत्र	सब स्वामी	सब स्वामी
सूर्य	073.56.22	बुध	राहु	बुध	गुरु
चन्द्र	160.05.36	बुध	चंद्र	चंद्र	मंगल
मंगल	357.23.16	गुरु	बुध	गुरु	चंद्र
बुध	070.06.02	बुध	राहु	गुरु	मंगल
गुरु	085.19.39	बुध	गुरु	बुध	गुरु
शुक्र	041.47.36	शुक्र	चंद्र	मंगल	सूर्य
शनि	269.27.46	गुरु	सूर्य	राहु	राहु
राहु	285.18.37	शनि	चंद्र	गुरु	मंगल
केतु	105.18.37	चंद्र	शनि	गुरु	शनि
अरुण	254.02.18	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल
वरुण	259.39.19	गुरु	शुक्र	राहु	शुक्र
यम	201.29.32	शुक्र	गुरु	गुरु	मंगल

घर के कारक ग्रह	
भाव	ग्रह
1	सू बु गु श रा के
2	श के
3	मं श के
4	गु
5	मं शु
6	सू मं बु शु श
7	मं बु गु के
8	चं शु रा
9	सू चं शु श रा
10	मं बु
11	शु
12	मं

ग्रह कारकत्व	
ग्रह	भाव
सूर्य	1 6 9
चन्द्र	8 9
मंगल	3 5 6 7 10 12
बुध	1 6 7 10
गुरु	1 4 7
शुक्र	5 6 8 9 11
शनि	1 2 3 6 9
राहु	1 8 9
केतु	1 2 3 7

दशा भोग्यः

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नामः के.पी. नया

चंद्र — चंद्र 29/ 6/90 से 4/ 4/91		चंद्र — मंगल 4/ 4/91 से 4/11/91		चंद्र — राहु 4/11/91 से 4/ 5/93		चंद्र — गुरु 4/ 5/93 से 4/ 9/94		चंद्र — शनि 4/ 9/94 से 4/ 4/96	
चंद्र	29/ 6/ 90	मंगल	17/ 4/ 91	राहु	25/ 1/ 92	गुरु	8/ 7/ 93	शनि	5/ 12/ 94
मंगल	17/ 7/ 90	राहु	18/ 5/ 91	गुरु	7/ 4/ 92	शनि	24/ 9/ 93	बुध	25/ 2/ 95
राहु	2/ 9/ 90	गुरु	16/ 6/ 91	शनि	3/ 7/ 92	बुध	2/ 12/ 93	केतु	29/ 3/ 95
गुरु	12/ 10/ 90	शनि	19/ 7/ 91	बुध	19/ 9/ 92	केतु	30/ 12/ 93	शुक्र	4/ 7/ 95
शनि	29/ 11/ 90	बुध	19/ 8/ 91	केतु	21/ 10/ 92	शुक्र	20/ 3/ 94	सूर्य	2/ 8/ 95
बुध	12/ 1/ 91	केतु	1/ 9/ 91	शुक्र	21/ 1/ 93	सूर्य	14/ 4/ 94	चंद्र	20/ 9/ 95
केतु	29/ 1/ 91	शुक्र	6/ 10/ 91	सूर्य	18/ 2/ 93	चंद्र	24/ 5/ 94	मंगल	23/ 10/ 95
शुक्र	19/ 3/ 91	सूर्य	17/ 10/ 91	चंद्र	3/ 4/ 93	मंगल	22/ 6/ 94	राहु	18/ 1/ 96
सूर्य	4/ 4/ 91	चंद्र	4/ 11/ 91	मंगल	4/ 5/ 93	राहु	4/ 9/ 94	गुरु	4/ 4/ 96

चंद्र — बुध 4/ 4/96 से 4/ 9/97		चंद्र — केतु 4/ 9/97 से 4/ 4/98		चंद्र — शुक्र 4/ 4/98 से 4/12/99		चंद्र — सूर्य 4/12/99 से 4/ 6/00		मंगल — मंगल 4/ 6/00 से 1/11/00	
बुध	17/ 6/ 96	केतु	17/ 9/ 97	शुक्र	14/ 7/ 98	सूर्य	13/ 12/ 99	मंगल	13/ 6/ 00
केतु	16/ 7/ 96	शुक्र	22/ 10/ 97	सूर्य	14/ 8/ 98	चंद्र	28/ 12/ 99	राहु	5/ 7/ 00
शुक्र	11/ 10/ 96	सूर्य	2/ 11/ 97	चंद्र	4/ 10/ 98	मंगल	9/ 1/ 00	गुरु	25/ 7/ 00
सूर्य	7/ 11/ 96	चंद्र	20/ 11/ 97	मंगल	9/ 11/ 98	राहु	6/ 2/ 00	शनि	18/ 8/ 00
चंद्र	19/ 12/ 96	मंगल	2/ 12/ 97	राहु	9/ 2/ 99	गुरु	2/ 3/ 00	बुध	9/ 9/ 00
मंगल	19/ 1/ 97	राहु	3/ 1/ 98	गुरु	29/ 4/ 99	शनि	28/ 3/ 00	केतु	17/ 9/ 00
राहु	6/ 4/ 97	गुरु	1/ 2/ 98	शनि	4/ 8/ 99	बुध	24/ 4/ 00	शुक्र	12/ 10/ 00
गुरु	14/ 6/ 97	शनि	5/ 3/ 98	बुध	29/ 10/ 99	केतु	4/ 5/ 00	सूर्य	19/ 10/ 00
शनि	4/ 9/ 97	बुध	4/ 4/ 98	केतु	4/ 12/ 99	शुक्र	4/ 6/ 00	चंद्र	1/ 11/ 00

मंगल — राहु 1/11/00 से 19/11/01		मंगल — गुरु 19/11/01 से 25/10/02		मंगल — शनि 25/10/02 से 4/12/03		मंगल — बुध 4/12/03 से 1/12/04		मंगल — केतु 1/12/04 से 28/ 4/05	
राहु	28/ 12/ 00	गुरु	4/ 1/ 02	शनि	28/ 12/ 02	बुध	25/ 1/ 04	केतु	10/ 12/ 04
गुरु	18/ 2/ 01	शनि	27/ 2/ 02	बुध	25/ 2/ 03	केतु	16/ 2/ 04	शुक्र	4/ 1/ 05
शनि	18/ 4/ 01	बुध	15/ 4/ 02	केतु	18/ 3/ 03	शुक्र	15/ 4/ 04	सूर्य	12/ 1/ 05
बुध	12/ 6/ 01	केतु	4/ 5/ 02	शुक्र	25/ 5/ 03	सूर्य	3/ 5/ 04	चंद्र	24/ 1/ 05
केतु	4/ 7/ 01	शुक्र	30/ 6/ 02	सूर्य	15/ 6/ 03	चंद्र	3/ 6/ 04	मंगल	3/ 2/ 05
शुक्र	7/ 9/ 01	सूर्य	17/ 7/ 02	चंद्र	18/ 7/ 03	मंगल	24/ 6/ 04	राहु	25/ 2/ 05
सूर्य	26/ 9/ 01	चंद्र	15/ 8/ 02	मंगल	11/ 8/ 03	राहु	17/ 8/ 04	गुरु	14/ 3/ 05
चंद्र	27/ 10/ 01	मंगल	5/ 9/ 02	राहु	11/ 10/ 03	गुरु	5/ 10/ 04	शनि	7/ 4/ 05
मंगल	19/ 11/ 01	राहु	25/ 10/ 02	गुरु	4/ 12/ 03	शनि	1/ 12/ 04	बुध	28/ 4/ 05

दशा भोग्यः

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नामः के.पी. नया

मंगल — शुक्र 28/ 4/05 से 28/ 6/06		मंगल — सूर्य 28/ 6/06 से 4/11/06		मंगल — चंद्र 4/11/06 से 4/ 6/07		राहु — राहु 4/ 6/07 से 16/ 2/10		राहु — गुरु 16/ 2/10 से 10/ 7/12	
शुक्र	8/7/05	सूर्य	5/7/06	चंद्र	22/11/06	राहु	30/10/07	गुरु	11/6/10
सूर्य	29/7/05	चंद्र	15/7/06	मंगल	4/12/06	गुरु	10/3/08	शनि	28/10/10
चंद्र	4/9/05	मंगल	22/7/06	राहु	6/1/07	शनि	14/8/08	बुध	1/3/11
मंगल	29/9/05	राहु	11/8/06	गुरु	4/2/07	बुध	1/1/09	केतु	21/4/11
राहु	2/12/05	गुरु	28/8/06	शनि	7/3/07	केतु	28/2/09	शुक्र	15/9/11
गुरु	28/1/06	शनि	18/9/06	बुध	7/4/07	शुक्र	10/8/09	सूर्य	28/10/11
शनि	4/4/06	बुध	6/10/06	केतु	19/4/07	सूर्य	29/9/09	चंद्र	10/1/12
बुध	4/6/06	केतु	13/10/06	शुक्र	24/5/07	चंद्र	20/12/09	मंगल	1/3/12
केतु	28/6/06	शुक्र	4/11/06	सूर्य	4/6/07	मंगल	16/2/10	राहु	10/7/12

राहु — शनि 10/ 7/12 से 16/ 5/15		राहु — बुध 16/ 5/15 से 4/12/17		राहु — केतु 4/12/17 से 22/12/18		राहु — शुक्र 22/12/18 से 22/12/21		राहु — सूर्य 22/12/21 से 16/11/22	
शनि	23/12/12	बुध	26/9/15	केतु	26/12/17	शुक्र	22/6/19	सूर्य	8/1/22
बुध	18/5/13	केतु	20/11/15	शुक्र	1/3/18	सूर्य	16/8/19	चंद्र	5/2/22
केतु	18/7/13	शुक्र	23/4/16	सूर्य	18/3/18	चंद्र	16/11/19	मंगल	24/2/22
शुक्र	9/1/14	सूर्य	9/6/16	चंद्र	20/4/18	मंगल	19/1/20	राहु	13/4/22
सूर्य	2/3/14	चंद्र	25/8/16	मंगल	12/5/18	राहु	1/7/20	गुरु	26/5/22
चंद्र	26/5/14	मंगल	19/10/16	राहु	8/7/18	गुरु	25/11/20	शनि	17/7/22
मंगल	26/7/14	राहु	7/3/17	गुरु	29/8/18	शनि	16/5/21	बुध	3/9/22
राहु	29/12/14	गुरु	9/7/17	शनि	29/10/18	बुध	19/10/21	केतु	22/9/22
गुरु	16/5/15	शनि	4/12/17	बुध	22/12/18	केतु	22/12/21	शुक्र	16/11/22

राहु — चंद्र 16/11/22 से 16/ 5/24		राहु — मंगल 16/ 5/24 से 4/ 6/25		गुरु — गुरु 4/ 6/25 से 22/ 7/27		गुरु — शनि 22/ 7/27 से 4/ 2/30		गुरु — बुध 4/ 2/30 से 10/ 5/32	
चंद्र	1/1/23	मंगल	8/6/24	गुरु	17/9/25	शनि	17/12/27	बुध	30/5/30
मंगल	3/2/23	राहु	5/8/24	शनि	18/1/26	बुध	26/4/28	केतु	17/7/30
राहु	24/4/23	गुरु	25/9/24	बुध	7/5/26	केतु	19/6/28	शुक्र	3/12/30
गुरु	6/7/23	शनि	25/11/24	केतु	22/6/26	शुक्र	21/11/28	सूर्य	14/1/31
शनि	1/10/23	बुध	19/1/25	शुक्र	30/10/26	सूर्य	7/1/29	चंद्र	22/3/31
बुध	18/12/23	केतु	11/2/25	सूर्य	8/12/26	चंद्र	23/3/29	मंगल	10/5/31
केतु	19/1/24	शुक्र	14/4/25	चंद्र	12/2/27	मंगल	16/5/29	राहु	12/9/31
शुक्र	19/4/24	सूर्य	3/5/25	मंगल	27/3/27	राहु	3/10/29	गुरु	1/1/32
सूर्य	16/5/24	चंद्र	4/6/25	राहु	22/7/27	गुरु	4/2/30	शनि	10/5/32

दशा भोग्यः

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नामः के.पी. नया

गुरु — केतु 10/ 5/32 से 16/ 4/33		गुरु — शुक्र 16/ 4/33 से 16/12/35		गुरु — सूर्य 16/12/35 से 4/10/36		गुरु — चंद्र 4/10/36 से 4/ 2/38		गुरु — मंगल 4/ 2/38 से 10/ 1/39	
केतु	30/ 5/32	शुक्र	26/ 9/33	सूर्य	1/ 1/36	चंद्र	14/ 11/36	मंगल	24/ 2/38
शुक्र	26/ 7/32	सूर्य	14/ 11/33	चंद्र	25/ 1/36	मंगल	12/ 12/36	राहु	14/ 4/38
सूर्य	13/ 8/32	चंद्र	4/ 2/34	मंगल	11/ 2/36	राहु	24/ 2/37	गुरु	29/ 5/38
चंद्र	11/ 9/32	मंगल	30/ 3/34	राहु	25/ 3/36	गुरु	28/ 4/37	शनि	22/ 7/38
मंगल	30/ 9/32	राहु	24/ 8/34	गुरु	3/ 5/36	शनि	14/ 7/37	बुध	10/ 9/38
राहु	21/ 11/32	गुरु	2/ 1/35	शनि	19/ 6/36	बुध	22/ 9/37	केतु	29/ 9/38
गुरु	5/ 1/33	शनि	4/ 6/35	बुध	29/ 7/36	केतु	20/ 10/37	शुक्र	25/ 11/38
शनि	1/ 3/33	बुध	20/ 10/35	केतु	16/ 8/36	शुक्र	10/ 1/38	सूर्य	12/ 12/38
बुध	16/ 4/33	केतु	16/ 12/35	शुक्र	4/ 10/36	सूर्य	4/ 2/38	चंद्र	10/ 1/39

गुरु — राहु 10/ 1/39 से 4/ 6/41		शनि — शनि 4/ 6/41 से 7/ 6/44		शनि — बुध 7/ 6/44 से 16/ 2/47		शनि — केतु 16/ 2/47 से 25/ 3/48		शनि — शुक्र 25/ 3/48 से 25/ 5/51	
राहु	20/ 5/39	शनि	26/ 11/41	बुध	25/ 10/44	केतु	10/ 3/47	शुक्र	5/ 10/48
गुरु	15/ 9/39	बुध	29/ 4/42	केतु	21/ 12/44	शुक्र	16/ 5/47	सूर्य	2/ 12/48
शनि	2/ 2/40	केतु	2/ 7/42	शुक्र	3/ 6/45	सूर्य	6/ 6/47	चंद्र	7/ 3/49
बुध	4/ 6/40	शुक्र	3/ 1/43	सूर्य	21/ 7/45	चंद्र	9/ 7/47	मंगल	14/ 5/49
केतु	25/ 7/40	सूर्य	27/ 2/43	चंद्र	12/ 10/45	मंगल	3/ 8/47	राहु	5/ 11/49
शुक्र	19/ 12/40	चंद्र	27/ 5/43	मंगल	8/ 12/45	राहु	2/ 10/47	गुरु	7/ 4/50
सूर्य	2/ 2/41	मंगल	30/ 7/43	राहु	4/ 5/46	गुरु	26/ 11/47	शनि	7/ 10/50
चंद्र	14/ 4/41	राहु	13/ 1/44	गुरु	13/ 9/46	शनि	29/ 1/48	बुध	19/ 3/51
मंगल	4/ 6/41	गुरु	7/ 6/44	शनि	16/ 2/47	बुध	25/ 3/48	केतु	25/ 5/51

शनि — सूर्य 25/ 5/51 से 7/ 5/52		शनि — चंद्र 7/ 5/52 से 7/12/53		शनि — मंगल 7/12/53 से 16/ 1/55		शनि — राहु 16/ 1/55 से 22/11/57		शनि — गुरु 22/11/57 से 4/ 6/60	
सूर्य	12/ 6/51	चंद्र	25/ 6/52	मंगल	1/ 1/54	राहु	20/ 6/55	गुरु	24/ 3/58
चंद्र	11/ 7/51	मंगल	28/ 7/52	राहु	2/ 3/54	गुरु	7/ 11/55	शनि	18/ 8/58
मंगल	1/ 8/51	राहु	24/ 10/52	गुरु	24/ 4/54	शनि	19/ 4/56	बुध	27/ 12/58
राहु	22/ 9/51	गुरु	10/ 1/53	शनि	27/ 6/54	बुध	15/ 9/56	केतु	21/ 2/59
गुरु	8/ 11/51	शनि	10/ 4/53	बुध	23/ 8/54	केतु	15/ 11/56	शुक्र	23/ 7/59
शनि	2/ 1/52	बुध	1/ 7/53	केतु	17/ 9/54	शुक्र	6/ 5/57	सूर्य	8/ 9/59
बुध	20/ 2/52	केतु	4/ 8/53	शुक्र	23/ 11/54	सूर्य	27/ 6/57	चंद्र	24/ 11/59
केतु	10/ 3/52	शुक्र	9/ 11/53	सूर्य	13/ 12/54	चंद्र	22/ 9/57	मंगल	17/ 1/60
शुक्र	7/ 5/52	सूर्य	7/ 12/53	चंद्र	16/ 1/55	मंगल	22/ 11/57	राहु	4/ 6/60

दशा भोग्यः

विंशोत्तरी दशा

अयनांश नामः के.पी. नया

बुध — बुध 4 / 6/60 से 1/11/62		बुध — केतु 1/11/62 से 28/10/63		बुध — शुक्र 28/10/63 से 28/ 8/66		बुध — सूर्य 28/ 8/66 से 4/ 7/67		बुध — चंद्र 4/ 7/67 से 4/12/68	
बुध	7 / 10 / 60	केतु	22 / 11 / 62	शुक्र	18 / 4 / 64	सूर्य	14 / 9 / 66	चंद्र	17 / 8 / 67
केतु	28 / 11 / 60	शुक्र	22 / 1 / 63	सूर्य	9 / 6 / 64	चंद्र	9 / 10 / 66	मंगल	17 / 9 / 67
शुक्र	22 / 4 / 61	सूर्य	9 / 2 / 63	चंद्र	4 / 9 / 64	मंगल	27 / 10 / 66	राहु	3 / 12 / 67
सूर्य	6 / 6 / 61	चंद्र	9 / 3 / 63	मंगल	4 / 11 / 64	राहु	13 / 12 / 66	गुरु	11 / 2 / 68
चंद्र	18 / 8 / 61	मंगल	30 / 3 / 63	राहु	7 / 4 / 65	गुरु	24 / 1 / 67	शनि	2 / 5 / 68
मंगल	8 / 10 / 61	राहु	24 / 5 / 63	गुरु	23 / 8 / 65	शनि	12 / 3 / 67	बुध	14 / 7 / 68
राहु	18 / 2 / 62	गुरु	11 / 7 / 63	शनि	4 / 2 / 66	बुध	25 / 4 / 67	केतु	14 / 8 / 68
गुरु	14 / 6 / 62	शनि	8 / 9 / 63	बुध	29 / 6 / 66	केतु	13 / 5 / 67	शुक्र	9 / 11 / 68
शनि	1 / 11 / 62	बुध	28 / 10 / 63	केतु	28 / 8 / 66	शुक्र	4 / 7 / 67	सूर्य	4 / 12 / 68

बुध — मंगल 4/12/68 से 1/12/69		बुध — राहु 1/12/69 से 19/ 6/72		बुध — गुरु 19/ 6/72 से 25/ 9/74		बुध — शनि 25/ 9/74 से 4/ 6/77	
मंगल	25 / 12 / 68	राहु	19 / 4 / 70	गुरु	8 / 10 / 72	शनि	1 / 3 / 75
राहु	19 / 2 / 69	गुरु	21 / 8 / 70	शनि	17 / 2 / 73	बुध	16 / 7 / 75
गुरु	6 / 4 / 69	शनि	17 / 1 / 71	बुध	13 / 6 / 73	केतु	13 / 9 / 75
शनि	3 / 6 / 69	बुध	27 / 5 / 71	केतु	30 / 7 / 73	शुक्र	24 / 2 / 76
बुध	23 / 7 / 69	केतु	20 / 7 / 71	शुक्र	16 / 12 / 73	सूर्य	12 / 4 / 76
केतु	14 / 8 / 69	शुक्र	23 / 12 / 71	सूर्य	27 / 1 / 74	चंद्र	3 / 7 / 76
शुक्र	14 / 10 / 69	सूर्य	9 / 2 / 72	चंद्र	5 / 4 / 74	मंगल	30 / 8 / 76
सूर्य	2 / 11 / 69	चंद्र	26 / 4 / 72	मंगल	23 / 5 / 74	राहु	25 / 1 / 77
चंद्र	1 / 12 / 69	मंगल	19 / 6 / 72	राहु	25 / 9 / 74	गुरु	4 / 6 / 77

॥ मैत्री चक्र ॥

नैसर्गिक मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	...	सम	मित्र	सम	सम	सम
मंगल	मित्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	सम	सम
बुध	मित्र	शत्रु	सम	...	सम	मित्र	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	...	शत्रु	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	...	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	...

तात्कालिक मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	...	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	...	शत्रु	मित्र	शत्रु
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	...	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	...	शत्रु
शनि	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	...

पंचधा मैत्री

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	...	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	अतिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	...	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	अतिमित्र	सम	...	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र
बुध	सम	सम	मित्र	...	शत्रु	अतिमित्र	शत्रु
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिशत्रु	...	सम	शत्रु
शुक्र	सम	अतिशत्रु	मित्र	अतिमित्र	मित्र	...	सम
शनि	अतिशत्रु	सम	सम	सम	शत्रु	सम	...

॥ षड्बल एवं भावबल तालिका ॥

षड्बल, वैदिक ज्योतिष में एक विधि है जो ग्रहों और घरों की ताकत में त्वरित जानकारी देता है। संस्कृत, इसका मतलब है छह इसलिए षड्बल ताकत के 6 विभिन्न स्रोतों के होते हैं। षड्बल गणना एक थका देने वाली प्रक्रिया है लेकिन कंप्यूटर को एक धन्यवाद जो सिर्फ एक माउस क्लिक करके इन ताकत की गणना को प्राप्त कर सकते हैं। षड्बल विधि प्रत्येक ग्रह और प्रत्येक घर के लिए एक मूल्य देता है। अधिक अंक एक घर और एक ग्रह में प्राप्त होते हैं तो षड्बल मजबूत होता है।

षड्बल तालिका

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	38.72	17.67	40.23	28.34	56.75	45.1	36.88
सप्तवर्गज बल	76.88	112.5	157.5	112.5	88.12	136.88	39.38
ओजयुग्मरस्यांश बल	30	15	0	15	15	15	30
केन्द्र बल	60	60	60	60	60	15	60
द्रेष्काण बल	1	1	1	1	1	1	1
कुल स्थान बल	205.59	205.17	257.73	230.84	219.87	211.97	166.25
कुल दिग्बल	24.74	6.54	0.78	2.97	2.1	45.98	3.48
नतोन्त बल	25.53	34.47	34.47	60	25.53	25.53	34.47
पक्ष बल	31.28	28.72	31.28	28.72	28.72	28.72	31.28
त्रिभाग बल	0	60	0	0	60	0	0
अब्द बल	0	15	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	0	0	30
वार बल	0	0	0	0	0	45	0
होरा बल	0	0	60	0	0	0	0
अयन बल	118.91	31.87	40.39	59.73	58.09	56.92	57.23
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल काल बल	175.72	170.06	166.14	148.45	172.34	156.17	152.98
कुल चेष्टा बल	57.48	28.72	32.99	2.31	3.88	19.63	54.7
कुल नैसर्गिक बल	60	51.42	17.16	25.74	34.26	42.84	8.58
कुल द्रिक् बल	-11.59	3.59	-6.13	-8.5	-20.13	1.07	28.38
कुल षड्बल	511.94	465.5	468.67	401.81	412.32	477.67	414.37
षड्बल (रुपस)	8.53	7.76	7.81	6.7	6.87	7.96	6.91
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	6.5	5.5	5
अनुपात	1.71	1.29	1.56	0.96	1.06	1.45	1.38
सापेक्षिक क्रम	1	5	2	7	6	3	4

भावबल तालिका

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपती बल	412.32	414.37	414.37	412.32	468.67	477.67	401.81	465.5	511.94	401.81	477.67	468.67
भाव दिग्बल	30	40	40	60	10	20	0	20	50	30	40	10
भावदृष्टि बल	104.25	84.88	82.23	17.54	1.33	1.07	-15.4	-12.35	41.32	42.05	54.79	62.07
कुल भाव बल	546.57	539.26	536.61	489.86	480	498.74	386.41	473.15	603.25	473.86	572.46	540.74
कुल भाव बल (रुपस में)	9.11	8.99	8.94	8.16	8	8.31	6.44	7.89	10.05	7.9	9.54	9.01
सापेक्षिक क्रम	3	5	6	8	9	7	12	11	1	10	2	4

॥ ग्रह दृष्टि (पाश्चात्य) ॥

	सूर्य 73 56	चंद्र 160 5	मंगल 357 23	बुध 70 6	गुरु 85 19	शुक्र 41 47	शनि 269 27	राहु 285 18	केतु 105 18	अरुण 254 2	वरुण 259 39	यम 201 29
सूर्य 73. 56	..	चतुर्थ 1.08	युति 2.41	सप्त 9.93	सप्त 6.19	..
चंद्र 160. 5	पंच 0.39	..	चतुर्थ 1.03
मंगल 357. 23
बुध 70. 6	युति 7.44	चतुर्थ 3.0	सप्त 7.37	सप्त 3.63	..
गुरु 85. 19	सप्त 7.24	सप्त 2.47	सप्त 6.22	पंच 1.08
शुक्र 41. 47	..	पंच 2.15	तृती 1.24
शनि 269. 27	चतुर्थ 1.96
राहु 285. 18	पंचा 0.92
केतु 105. 18	..	तृती 0.39	सप्त 10.0
अरुण 254. 2	युति 6.26	..
वरुण 259. 39	युति 3.46
यम 201. 29	तृती 2.08	..

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	षष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।

3. ग्रहों के नाम के नीचे ग्रहों के अंश व कला दिए गए हैं।

4. एप्पलाइंग दृष्टि के लिए बाएं से ऊपर देखें और सेपरेटिंग दृष्टि के लिए ऊपर से बाएं देखें।

॥ भावमध्य पर दृष्टि ॥

	1 259 1	2 292 35	3 326 9	4 359 43	5 26 9	6 52 35	7 79 1	8 112 35	9 146 9	10 179 43	11 206 9	12 232 35
सूर्य 73. 56	सप्त 6.61	युति 6.61	..	पंचा 0.78
चंद्र 160. 5	सप्त 0.71	पंचा 0.5
मंगल 357. 23	युति 8.44
बुध 70. 6	सप्त 4.05	युति 4.05
गुरु 85. 19	सप्त 5.8	तृती 2.58	चतुर्थ 0.8	पंच 2.58	..
शुक्र 41. 47	युति 2.8	सप्त 2.8
शनि 269. 27	तृती 1.35	चतुर्थ 2.87
राहु 285. 18	..	युति 5.15	नवां 0.15
केतु 105. 18	..	सप्त 5.15	युति 5.15	नवां 0.15
अरुण 254. 2	युति 6.68	..	पंचा 0.88
वरुण 259. 39
यम 201. 29	तृती 1.76	चतुर्थ 2.45	पंच 0.67	युति 6.89	..

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	षष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।

3. चलित चक्र की भावमध्य अंश का उपयोग गणना के लिए किया गया है।

4. तालिका में ग्रहों की भाव मध्य पर एप्पलाइड दिखाई गई है।

॥ केपी संधि पर दृष्टि ॥

	1 259 1	2 291 54	3 326 47	4 359 43	5 28 20	6 53 49	7 79 1	8 111 54	9 146 47	10 179 43	11 208 20	12 233 49
सूर्य 73. 56	सप्त 6.61	युति 6.61	..	पंचा 0.15	..	अष्टा 0.41	..
चंद्र 160. 5	सप्त 1.13
मंगल 357. 23	युति 8.44
बुध 70. 6	सप्त 4.05	युति 4.05
गुरु 85. 19	सप्त 5.8	तृती 2.27	चतुर्थ 0.8	पंच 1.49	..
शुक्र 41. 47	युति 1.98	सप्त 1.03	सप्त 1.98
शनि 269. 27	तृती 1.67	चतुर्थ 2.87
राहु 285. 18	..	युति 5.6
केतु 105. 18	..	सप्त 5.6	युति 5.6
अरुण 254. 2	युति 6.68	..	पंचा 0.24
वरुण 259. 39
यम 201. 29	तृती 1.76	चतुर्थ 2.79	पंच 0.35	युति 5.43	..

नोट :

1. गणना में निम्नलिखित दृष्टियों का उपयोग किया गया है :

संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन	संक्षिप्त-दृष्टि	अंश	दायरा	वजन
युति	0	15	10	सप्त	180	15	10
पंच	120	6	3	चतुर्थ	90	6	3
तृती	60	6	3	अर्धद्वितीय	45	1	1
नवां	40	1	1	पंचा	72	1	1
अष्टा	135	1	1	पष्ठ	150	1	1

2. तालिका में दृष्टि (अगर मौजूद हो तो) और दृष्टि का वजन दिया गया है। जितना ज्यादा वजन होगा, दृष्टि उतनी ही प्रभावी होगी।

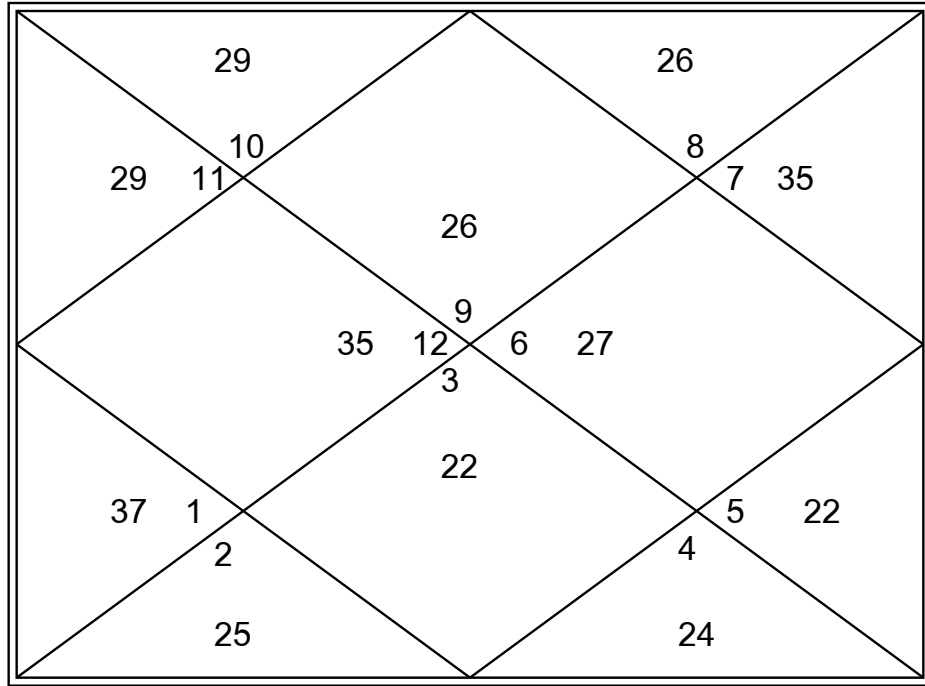
3. निरयन भाव चलित (केपी चक्र) के भाव प्रारम्भ अंश का उपयोग गणना के लिए किया गया है।

4. तालिका में ग्रहों की केपी भाव प्रारम्भ पर एप्पलाइड दृष्टि दिखाई गई है।

॥ अष्टकवर्ग तालिका ॥

राशि संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	5	2	4	3	2	4	6	6	3	3	5	5
चन्द्र	5	4	3	3	4	5	3	4	4	5	4	5
मंगल	5	2	2	2	3	3	6	4	4	1	2	5
बुध	5	5	5	4	3	4	6	4	5	5	3	5
गुरु	6	3	6	4	3	6	5	2	4	6	4	7
शुक्र	6	4	1	5	6	3	5	3	3	6	6	4
शनि	5	5	1	3	1	2	4	3	3	3	5	4
योग	37	25	22	24	22	27	35	26	26	29	29	35

अष्टकवर्ग चार्ट:



॥ प्रस्तरअष्टकवर्ग तालिका ॥

सूर्य

चन्द्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
चन्द्र	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
बुध	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	4
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	3
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
राहू	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
योग	5	2	4	3	2	4	6	6	3	3	5	5	

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	0	0	1	0	0	1	1	1	0	1	6
चन्द्र	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	1	6
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	7
बुध	1	0	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	8
गुरु	1	1	1	0	0	1	0	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	0	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	7
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
राहू	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	4
योग	5	4	3	3	4	5	3	4	4	5	4	5	

मंगल

बुध

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	5
चन्द्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	1	4
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	7
राहू	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	0	5
योग	5	2	2	2	3	3	6	4	4	1	2	5	

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	5
चन्द्र	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
बुध	1	1	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	8
गुरु	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	4
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
शनि	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
राहू	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
योग	5	5	5	4	3	4	6	4	5	5	3	5	

गुरु

शुक्र

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
चन्द्र	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
बुध	1	0	1	1	0	1	1	1	0	0	1	1	8
गुरु	1	0	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	8
शुक्र	0	0	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	6
शनि	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
राहू	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	1	9
योग	6	3	6	4	3	6	5	2	4	6	4	7	

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	3
चन्द्र	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
बुध	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	5
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	5
शुक्र	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	9
शनि	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	1	1	7
राहू	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	1	8
योग	6	4	1	5	6	3	5	3	3	6	6	4	

शनि

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन	योग
सूर्य	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	7
चन्द्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
बुध	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	1	6
गुरु	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	4
शुक्र	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	3
शनि	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	4
राहू	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
योग	5	5	1	3	1	2	4	3	3	3	5	4	

Disclaimer

We want to make it clear that we put our best efforts in providing this report but any prediction that you receive from us is not to be considered as a substitute for advice, program, or treatment that you would normally receive from a licensed professional such as a lawyer, doctor, psychiatrist, or financial adviser. Although we try our best to give you accurate calculations, we do not rule out the possibility of errors. The report are provided as-is and we provides no guarantees, implied warranties, or assurances of any kind, and will not be responsible for any interpretation made or use by the recipient of the information and data mentioned above. If you are not comfortable with this information, please do not use it. In case any disputes the court of law shall be the only courts of Agra, UP (India).